



औरंगाबाद, १५५

दौलताबाद

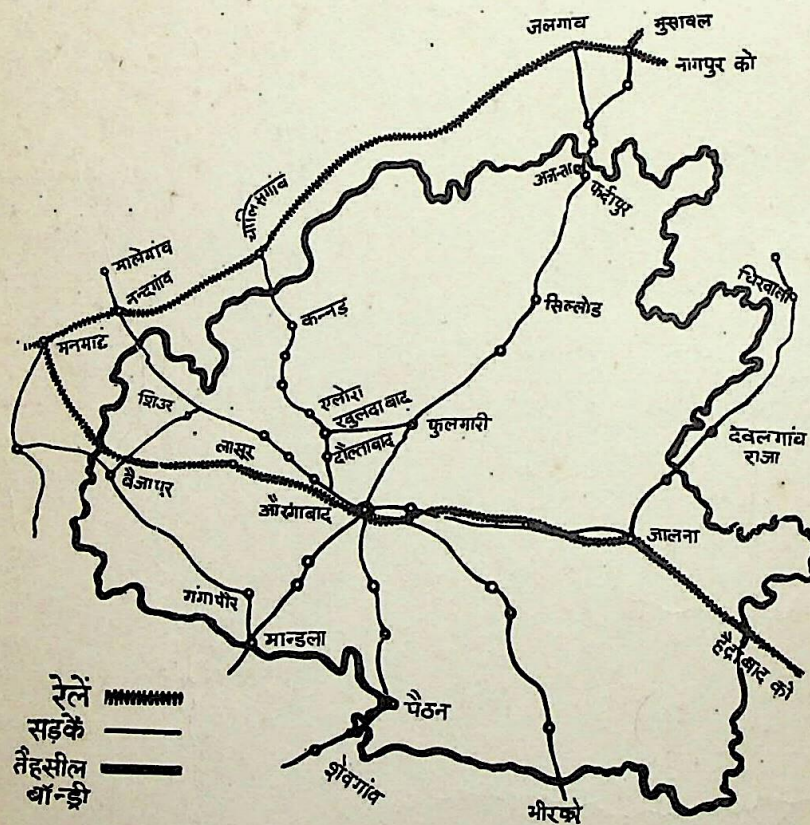
एलोरा, अजंता

सचित्र हिन्दी
मार्ग दर्शक

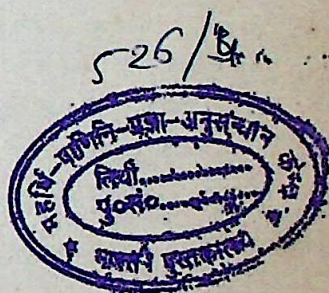
१५५

औरंगाबाद, दौलताबाद, एलोरा, अजंता

औरंगाबाद तहसील



औरंगाबाद, दौलताबाद, एलोरा, अजंता सचित्र हिन्दी मार्ग दर्शक



लेखक : मुक्तागिरी—एल० जैन

हिन्दी पारंगत आगरा (बी० ए०, बी० एड०)

प्रकाशक :

जैना पब्लिशिंग कम्पनी

पो० औ० बाक्स नं० 2004

1899, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

स्टाकिस्ट : मै० अचल कुमार, नेमीनाथ साहूजी जैन
सराफा रोड—औरंगाबाद

(महाराष्ट्र)

मूल्य प्रति 7/- रु०

दो शब्द

संसार में भारतीय संस्कृति प्राचीन-काल से आज तक ललाम भूत विशेषतायें लिए हुए हैं, जिनमें 'मराठवाड़ा' का स्थान सर्वोपरी है। मराठवाड़ा के भूमितल पर महान् संत, औलिया, राजा-महाराजा अपनी-अपनी पावन स्मृतियाँ छोड़ गये हैं। यही कारण है कि, यहाँ की संस्कृति का परिचय प्राप्त कराने के लिए ज्ञानी, विद्वान्, इतिहासज्ञ, कला-निपुण यात्री-गण पर्यटन करते हुए इस भूमि की संस्कृति को प्रत्यक्ष अवलोकन करने के लिए लालायित रहते हैं। यहाँ तक कि देश विदेश के यात्रीगण यहाँ आकर विशेष रूप से एलोरा अजन्ता की गुफाओं को देखकर आनन्द-विभोर हो जाते हैं।

एलोरा में तीन धर्मों की संगम-रूप गुफायें हैं :---

(1) सनातन धर्म, वैष्णव और शैव गुफाएँ, (2) बौद्ध गुफाएँ, (3) जैन गुफाएँ।

अजन्ता में केवल बौद्ध गुफाएँ ही हैं। एलोरा अजन्ता की प्राचीन गुफाओं में शिलालेख, ऐतिहासिक और धार्मिक परम्परा का प्रत्यक्ष दर्शन यहाँ की शिल्प-कलाओं से हो जाता है। प्रत्येक स्थान पूर्वोतिहास से भरा पड़ा है। इसीलिए औरंगाबाद जिला अन्तर्गत महत्वपूर्ण स्थानों का परिचय मार्ग दर्शक द्वारा करा देना नितांत आवश्यक है। इन स्थानों का अभ्यासपूर्ण निरीक्षण करने से प्राचीन संस्कृति की जानकारी होकर वर्तमान में कुछ सुधार लाये जा सकते हैं। अत्यन्त अल्पावधि में हमने यह किताब प्रकाशित करने का प्रयास किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह हिन्दी में लिखित मार्ग दर्शिका पर्यटकों को सुविधा प्रदान करने वाली सिद्ध होगी।

प्रकाशक



मराठवाड़ा (महाराष्ट्र अन्तर्गत)

औरंगाबाद का पूर्वोत्तिहास और प्रेक्षणीय स्थान



526

संस्कृति केन्द्र औरंगाबाद का पुराना नाम खड़की था जो एक खड़क (शिला) पर बसा हुआ लघुग्राम था, इसे खिड़की भी कहते हैं।

मुगल बादशाह औरंगजेब ने इ० स० 1653 में इसे 'औरंगाबाद' नाम से दक्षिण की राजधानी बनाया। पास पड़ोस में और भी सांस्कृतिक-प्रेक्षणीय स्थान होने के कारण औरंगाबाद एक आकर्षण केन्द्र बन गया। ऐसा कहा जाता है कि यह स्थान दक्षिण भारत की ओर नजर रखने के लिए खिड़की की तरह काम देगा और राज्य शासन चलाने में सुविधा होगी, केवल इसी उद्देश्य को लेकर औरंगजेब ने इस स्थान का चयन किया।

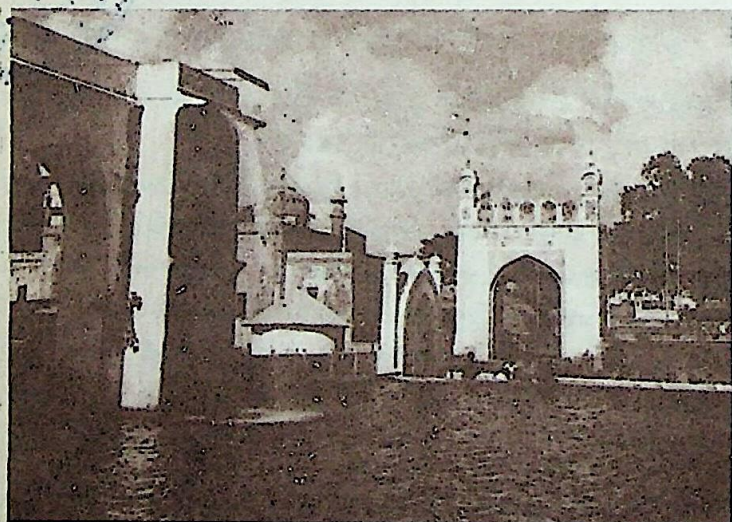
औरंगाबाद नाम देने के पहले 'खड़की' या 'खिड़की' इन नामों में कई परिवर्तन हुए। (1) अहमदनगर की सुलताना चांद बीबी के मन्त्री मलिकंबर ने इसे अपने पुत्र के नाम से 'फतेहनगर' नाम दिया। (2) इतिहासज्ञों का कहना है कि खिड़की का नाम पहले 'राजनडाग' था। (3) मुगल काल में मुगलों की छावनी औरंगाबाद ही थी। निजाम की राजधानी और जिले का स्थान मराठवाड़े का केन्द्र स्थान औरंगाबाद ही रह चुका है। (4) स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् मराठवाड़ा विद्यापीठ की स्थापना हुई। शिक्षणक्षेत्र और भी विस्तृत हो गया। इस शहर के साथ शालिवाहन चालुक्य, राष्ट्रकूट, यादव आदि राजघरानों का निकट का सम्बन्ध रहा है। औरंगजेब की मृत्यु के बाद निजाम उल्मुल्क के अधिकार में आ गया जिन्होंने इसे राजधानी बनवाया था। इसके बाद (भागानगर) हैदराबाद

(औंध्र) को राजधानी बनाया। इ० स० 1947 में भारत सरकार के अधिकार में आ गया जो आज महाराष्ट्र सरकार के शासन में हैं।

औरंगाबाद के प्रमुख स्थान

पनचक्की :—पनचक्की खामनदी के किनारे पर रमणीय स्थान है। दर्शकों के लिए सुबह 8 बजे से शाम 8 बजे तक खुला रहता है। प्रवेश शुल्क 25 से 40 पैसे तक देना पड़ता है। शुक्रवार को बिना प्रवेश शुल्क देख सकते हैं।

एक लोहे का विशाल पंखा है जिसके ऊपर पानी की मोटी धारा पड़ने पर चलने वाली मशीन (आटे की चक्की) को पनचक्की कहते हैं। इसे पंखे के साथ एक्सल लगाकर ऊपरी कमरे में आटा पीसने की बड़ी चक्की से जोड़ा गया है। पानी की विशाल धारा से पंखा घूमने के कारण चक्की भी घूमती रहती है। पुराने जमाने में इसी चक्की से गरीबों के और छावनी के सिपाहियों के लिए आटा पिसवाया जाता था। यह पुरातन अनोखा यंत्र है।



जलयोजना :—यह एक अनोखी योजना है जिसे देखकर सायमन पद्धति का प्रयोग-सा प्रतीत होता है। औरंगाबाद से 5-6 किलोमीटर पर उत्तर दिशा में जटवाड़ा की पहाड़ी है जहाँ पानी का भरपूर भण्डार मिला। भूगर्भ में 10-12 मीटर गहरे कुएँ खोदने के बाद कुओं की गहराई के बराबर नहर की गहराई तक खोदते समय बहुत से पानी के स्रोतों (झरने) मिले। निकले हुए झरनों का पानी इकट्ठा करवा कर नहर द्वारा खाम नदी के किनारे से पनचक्की तक लाकर भूमिगत बनाया गया। मिट्टी के विशाल नलों द्वारा पानी को 6 मीटर दीवार पर

चढ़ाया गया। जो झरनों के रूप में हीज में आज भी गिरते हुए दिखाई देते हैं। इस योजना में 40 लाख रुपये खर्च हुये।

बाबाशाह मुसाफिर :— गजदवान के रहने वाले कश्मीर में बाबाशाह नक्श-बन्दी के शिष्य बने। मक्का मदीना से यात्रा करते हुए औरंगाबाद आकर रहे। इ० स० 1914 में स्वर्गवास हुआ।

बाबाशाह नक्शबन्दी :— गजदवान के सूफी फकीर थे। बाबाशाह मुसाफिर के मामू और गुरु थे। आज पनचक्की का स्वरूप इन्हीं के प्रभाव से प्रभावित हुआ है।

हीज :—

3 मीटर गहरा हीज जिसमें झरने का पानी गिरता रहता है। एक विशाल फव्वारा बना हुआ है।

बरगद और कुआं :—

बरगद एक वट वृक्ष है जिसे 600 साल पुराना बताते हैं यहीं इसी के पास 15 मीटर गहरा कुआं है।

मस्जिद :—

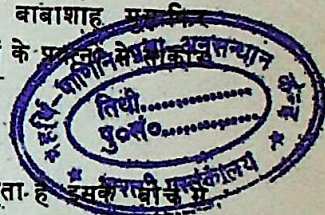
प्रवेश द्वार के दाहिने हाथ की ओर एक खूबसूरत मस्जिद है। जिसके सामने जलील बेग हीज है। इसमें रंग-बिरंगी मछलियां स्वच्छन्द घूमती हैं। फव्वारे भी लगे हुए हैं इसके नीचे तहखाना है जो एक विश्रामालय बन गया है। इसे जलील बेग अधिकारी ने बनवाया था।

बरगाह :—

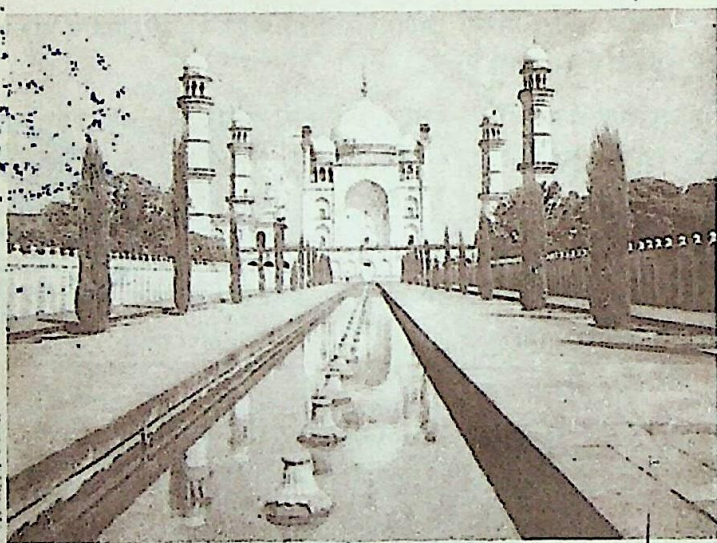
हैदराबाद राज्य के संस्थापक आसिफ जाह ने बनवायी। बीच में बाबाशाह पलंगपोश नक्शबन्दी की कब्र और बरामदे में बाबाशाह मोहम्मद की कब्र है। यहाँ गाना-बजाना, हिस्त आदि कार्य मना है। अहाते में सुन्दर बगीचा, पश्चिमी विभाग में बाबाशाह मुसाफिर के कपड़े रखे हैं और सामने के हाल में पुस्तकालय है।

बीबी का मकबरा

औरंगजेब की चौथी बेगम रबिया दुरानी (दिलराज बानू बेगम) की कब्र पर बनी हुई ऐतिहासिक वस्तुकला है। रबिया दुरानी ईरान के राजघराने की राजकन्या थी। औरंगजेब ने दक्षिण पर चढ़ाई की उसी समय बेगम का स्वर्गवास हुआ। शहजादा आजमशाह ने (इ० स० 1650 से 1660 तक) अपनी माँ की स्मृति में विशाल मकबरा बनवाया। यह आगरे के ताजमहल की प्रतिकृति है। या यूँ कह सकते हैं कि यह दक्षिण का ताजमहल है। इसके बनाने में 6 लाख



68 हजार रुपये खर्च हुए। आगरे के ताजमहल के निर्माण में 23 करोड़ रुपये लगे हैं और बीस वर्ष तक काम चलता रहा। यह अनोखी वस्तु स्थापत्य कला भूषण अताउल्ला और हंसपतराय ने तैयार की, जिनका नाम भी अंकित हैं।

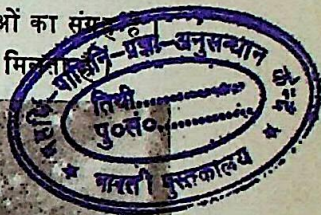


दरवाजे के अन्दर चबूतरे पर हाँज है जिसमें फूल बाग है। चबूतरे से मकबरा बड़ा सुहावना दिखाई देता है। बीच-2 में दूर तक फव्वारे लगे हैं। प्रवेश द्वार से मकबरे तक सामानान्तर वृक्ष दोनों ओर हैं। दोनों बाजुओं से मकबरे तक रास्ता गया है। इसी प्रकार चारों ओर एक-सी रचना है। मकबरे की इमारत जिस चबूतरे पर खड़ी है। वह चबूतरा लगभग 8 वर्ग मीटर (72 वर्ग फीट) और 6 मीटर ऊँचा है। निचला भाग दो मीटर ऊँचाई का जयपुरी संगमरमर का है और ऊपरी भाग चूने का है।

मकबरे के बीचों-बीच बीबी की कब्र है चबूतरे से नीचे की ओर सीढ़ियाँ उतर कर जाना पड़ता है। कब्र सादी है, जिसके चारों ओर संगमरमर की जालियाँ लगी हुई हैं। मकबरे का दरवाजा तबि की चादर से ढका हुआ है। बाँयी ओर के दरवाजे के किवाड़ पर तोता अनार का दाना चोंच में लिए हुए दिखाया गया है। पूरव-पश्चिम भाग एक से बने हुए हैं उत्तर की दीवार में टेढ़ा छेद है जिससे दीवार की चौड़ाई स्पष्ट हो जाती है। यह दीवार 8 मीटर (26 फीट) चौड़ी है छत के चारों ओर झरोखे हैं। जिससे कब्र पर दिन में सूर्य की किरणें और रात में चांद की छटा पड़ती है तथा वर्षा में पानी की बूँदें भी पड़ती हुई दिखाई देती हैं।

चबूतरे की ऊँचाई के बराबर संगमरमर का छज्जा है जिस पर से कब्र

दिखाई देती है। आलों के अन्दर कलापूर्ण काम और खिड़कियों की जालियाँ बड़ी सुन्दर हैं। मकबरे के चारों ओर की दीवारें तट का काम करती हैं चारों ओर अन्दर बाहर वांग लगे हुए हैं। मकबरे के पीछे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का संग्रहालय है। यह एक मुगल काल में उपयोग में लायी गयी वस्तुओं का संग्रहालय है। प्रवेश शुल्क 50 पैसे और शुक्रवार को बिना प्रवेश शुल्क देखने को मिलता है।



औरंगाबाद की गुफाएँ

औरंगाबाद का गुफाएँ निपटा निर्जन के समीप मकबरे से तीन किलोमीटर की दूरी पर हैं। गुफाएँ बुद्ध धर्म की हैं जिनमें जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर नेमीनाथ भगवान भी हैं। ये गुफाएँ तीन विभागों में विभाजित हैं। विभाग एक में :— गुफायें 1 से 5, विभाग दो में :—गुफायें 6 से 9, विभाग तीन में :—गुफाएँ 10 से 12 हैं। ये तीनों विभाग मिलाकर 2 कि० मी० का अन्तर है। विभाग 1 और 2 पास-पास हैं और आसान हैं। तीसरे विभाग में रास्ते की सुविधा नहीं है। इन गुफाओं का निर्माण दूसरी शती से सातवीं शती तक होना माना जाता है 12 गुफाओं में 11 बौद्ध विहार हैं और 1 चैत्यगृह है।

विभाग 1 में (1 से 5 गुफाएँ)

गुफा 1 :—

सामने के स्तम्भ अच्छी हालत में हैं किन्तु अपूर्ण गुफा है। इसमें दरवाज़े, और खिड़कियाँ उजाले के लिए हैं, विविध आसनों से युक्त बुद्ध मूर्तियाँ हैं। नागराज,

नागरानी, बोधिसत्व- पद्मपाणि और वज्रपाणि यह एक आकर्षण केन्द्र है। यहाँ शाल मंजिकाओं की शान वैशिष्ट्यपूर्ण हैं। गुफाओं के बगल में जल संचय है। बाकी गिरा पड़ा सा है।

गुफा 2—

गुफा के दाहिने हाथ पर जलाशय है। अगला हिस्सा गिरा हुआ है। इसका सम्बन्ध महायान पंथ के अनुयाइयों से होना चाहिए गर्भग्रह में बुद्ध मूर्ति है जिसके बाजू से प्रदक्षिणा देख सकते हैं। इसमें कई जगह विविध प्रकार की मूर्तियां देखने योग्य हैं।

गुफा 3 :—

गुफा 2 के बाजू में विहार स्थान है। बरामदे के आकार का सभा मंडप है। अन्तराल गर्भग्रह में बुद्ध भगवान हैं, इनके दोनों ओर की मूर्तियों के बैठने का ढंग बोध भिक्षु का-सा है। आकर्षक ब्रैकट फीगर्स हैं, इनमें वज्रलेप चित्रों के आकर्षक अवशेष दिखाई देते हैं।

गुफा 4 :—

यह हीनयान चैत्य ग्रह है। सम्मुख स्तूप है किन्तु शिल्प का अभाव होने से हीनयान अनुयाइयों की है। स्तम्भ साधारण है, छत गज पृष्ठाकृति है।

गुफा 5 :—

कुछ सीढ़ियाँ चढ़ जाने पर इस गुफा के सम्मुख आ जाते हैं। गर्भग्रह में ध्यानमग्न जैन मूर्ति है और मूर्ति के ऊपर गन्धर्व हाथ में पुष्प-माला लिये हुए बताये गये हैं।

विभाग 2 में (गुफाएँ 6 से 9 तक)

विभाग 1 से 2 कि० मी० की दूरी पर आगे रास्ता सरल है।

गणेश गुफा—

यह गुफा हाल ही में उपलब्ध हुई है। इस गुफा के बीचों-बीच श्री गणेश जी की शिल्प कला है। दोनों ओर चतुर्भुजा देवी की खड़ी मूर्तियाँ हैं। पद्मासन की बुद्ध मूर्ति, सामने वीरभद्र, शिव और 6 देवियों की मूर्तियाँ हैं। किन्तु साथ में वीर भद्र शिव होने से सप्तमात्रकाओं की स्मृति होती है।

गुफा 6

इस गुफा के सामने के स्तंभ अभी तैयार किये गए हैं इस गुफा में बौद्धमत पद्मपाणि और वज्रपाणि वृद्ध ही आकर्षक हैं। गर्भग्रह में बुद्ध और साथ में चंवर-

धारी सेवक बतलाये गये हैं। नागराज तथा घुटनों पर बैठे भक्तगण देखने योग्य हैं।

गुफा 7—

औरंगाबाद की गुफाओं में सातवीं गुफा सर्वश्रेष्ठ गुफा मानी जाती है। प्रवेश करते ही लक्ष्य द्वार रक्षकों पर केन्द्रित हो जाता है सीधे हाथ को अवलोकितेश्वर की मूर्ति है। अवलोकितेश्वर संकट ग्रस्त लोगों की मदद कर रहे बतलाये गये हैं। अपने सीधे हाथ को बोधिसत्व की मूर्ति है प्रवेश करने पर दो आकर्षक मूर्तियाँ दिखाई देती हैं। गर्भग्रह में भगवान बुद्ध हैं। दाहिनी ओर अप्रतिभा-शिल्प है। एक मूर्ति वाद्यवृंद के साथ बताया गई है। उसका खंडहर होना सजीव दिखता है। मालूम होता है कि वह समय, काल, ताल, लय इन सभी नियमों का पालन करने जा रहे हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यह राजतडाग की नृतिका है

गुफा नं० 8—

यह गुफा नाम मात्र की है।

गुफा नं० 9—

बहुत सी सीढ़ियाँ चढ़ जाने पर इस गुफा के सम्मुख आ जाते हैं इस गुफा में बुद्ध की महा निर्वाण अवस्था दिखाई देती है।

विभाग दो से तीन कि० मी अन्तर पर तीन गुफायें विहार स्थान हैं। जो गिरी पड़ी हालत में हैं।

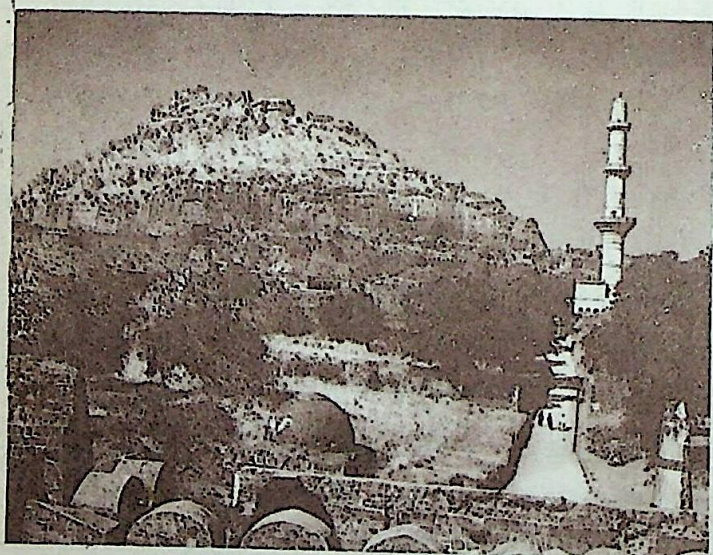
प्रतिष्ठान या पैठण

इ० सं० दूसरी शति में सात वाहन वंश की राजधानी का शहर था। यहाँ विहार और कला भिक्षु लोग रहते थे। यहाँ का जैन मंदिर, गांव में संत एकनाथ मन्दिर, गोदावरी नदी के किनारे सन्त एकनाथ की समाधि एवं नवनाथ का स्थान आदि प्रेक्षणीय हैं। यहाँ पर प्राचीन अवशेष आज भी दिखाई देते हैं। यहाँ प्राचीन काल से रेशम की साड़ियाँ (पैठणी) तैयार होती हैं। इसे महाराष्ट्र सरकार आज भी पैठण की पैठणी को प्रोत्साहन दे रही है। यहाँ महाराष्ट्र सरकार द्वारा जायकवाड़ी प्रोजेक्ट बनाया हुआ है। जो पैठण के निकट है। इस योजना से खेतों को पानी मिल रहा है। औरंगाबाद को भी पानी मिले इसलिए बड़े-बड़े पाइप पैठण और औरंगाबाद तक बिछाये गये हैं यहाँ पर भव्य ज्ञानेश्वर उद्यान बनाने की योजना कार्यन्वित होने जा रही है।

देवगिरी-दौलताबाद

औरंगाबाद से 15 कि० मी० दूरी पर अत्यन्त प्रेक्षणीय स्थान है जो राजा रामदेव काल की याद दिलाता है। औरंगाबाद से एलोरा जाते समय रास्ते में ही

दिखाई देता है। पहले इसका नाम देवगिरी था। यादव वंशीय राजपुत्र भिल्लम ने यह किला बनवाया। किले के चारों ओर अत्यन्त गहरा खंदक है। इसीलिए यह किला शत्रुओं को अविजय था। चौदहवीं शताब्दी में मोहम्मद बिन तुगलक इसे देखकर प्रभावित हुआ और इसे राजधानी बनाने के लिए दिल्ली से देवगिरी चलने के लिए प्रजाजनों को आज्ञा दी। प्रजा के स्थानान्तर के बाद दौलताबाद में प्रजा की सुख-सुविधाएं खाने-पीने की सुव्यवस्था करना असंभव हो गया। तब हुकम हुआ कि देवगिरी से दिल्ली चलो। कुछ महीने ही दौलताबाद भारत की राजधानी बन सका। विभिन्न सदियों के राजाओं ने, अधिकारियों ने, इसकी सुरक्षा की सात दीवारें बनवायीं। जमीन से किले की ऊंचाई 220 मीटर है।



महाकोट—

मबसे बाहर की विशाल दीवार महाकोट कहलाती है। प्रवेश द्वार भी विशाल है। द्वार को हिलाना और ढकेलना मनुष्य आदि के बाहर है। द्वार में लोहे की नुकीली कीलें ऐसे गढ़ गयीं हैं कि मस्त हाथी भी उसे ढकेल न पाये। इसके अन्दर जाने के बाद रक्षकों के लघु कमरे दिखते हैं जहाँ विभिन्न आकार की और शक्तिशाली तोपें दिखाई देती हैं। इन्हें पार करके छोटे से दरवाजे में प्रवेश करना पड़ता है।

शिल्प संग्रह—

दरवाजे से प्रवेश करते ही बायीं ओर छोटा-सा शिल्प संग्रह दिखाई पड़ता है। दीवारों के पास व चतुर्तरे पर शिल्प रखे हुए हैं जैन धर्माथ तीर्थंकर, गणेश

मिथुन मूर्तियां आदि कई शिल्प यहाँ मौजूद हैं। यह शिल्प जमीन स्वच्छ करते समय प्राप्त हुई थी इन्हें देखकर आगे बढ़ते हैं तब बुर्ज दिखाई पड़ता है।

बुर्ज—

यह वाचिंग टावर है। बहुत ऊँचा है, इसमें छोटों-2 खिड़कियां ऐसी बनी हुई हैं कि अन्दर का व्यक्ति बाहर के पूरे व्यवहार देख सकता है किन्तु बाहर का व्यक्ति अन्दर का व्यवहार देख नहीं सकता।

इसके बाद छोटे दरवाजे से आगे बढ़ते ही पूर्ण किला नजर आता है। यह जगह फोटो खिचवाने के लिए योग्य स्थान है।

हाथीहोद—

बायीं ओर बहुत बड़े हीज के सामने पहुँचते ही भव्य आकार लंबा चौड़ा होने के कारण “हाथीहोद” कहलाता है। कहा जाता है कि राजाओं के हाथियों का जल विहार का स्थान हाथीहोद है। अब हम एक छोटे से दरवाजे में से मन्दिर के परिसर में प्रवेश करते हैं।

भारत माता मन्दिर

वास्तव में पहले यह जैन धर्म का मंदिर था उसके पश्चात अब भारत माता का मन्दिर कहा जाता है।

यहाँ के स्तम्भ भिन्न-2 आकार के और आकर्षक हैं।

चांद मीनार

दिल्ली की कुतुब मीनार के बाद चांद मीनार का नाम आता है। बहुत बड़े लम्बे चौड़े चबूतरे पर 70 मीटर ऊँचा यह चांद मीनार बनाया गया है। ई०सन् 1435 अला-उद्दीन बहमनी (दूसरा) ने अपनी विजय की स्मृति में इसे बनवाया इसकी ऊँचाई किले से कुछ अधिक नहीं है। आज किले की ऊँचाई से मीनार तीसरे हिस्से तक है। अन्दर सीढ़ियां हैं, मीनार पर पहुँचने



पर यहाँ से किले का सम्पूर्ण दृश्य दिखाई देता है ।

हेमाङ्ग पंथी मन्दिर —

मीनार से उतरने पर थोड़ी ही दूरी पर हेमाङ्ग पंथी मन्दिर है । पत्थरों पर पत्थर रखकर एक ऐसी विशिष्ट पद्धति से इसका निर्माण कार्य हुआ है कि ऐसी अद्भुत कला का आविष्कार देख कर मालूम होता है कि उस समय कि वस्तु शिल्प चरम सीमा पर थी ।

कालकेट, चीनी महल

यह एक ऐसा दरवाजा है कि जिसमें शत्रुओं का प्रवेश होना दुर्लभ है थोड़ी दूर जाने के बाद चीनी महल लगता है । जिसमें चीनी मिट्टी के टाईल्स के टुकड़ों का उपयोग किया गया है । इसी कारण से इसे चीनी महल कहने हैं ।

निजामशाही महल—

अहमद नगर के निजामशाही के अधिकारियों ने किले पर बहुत सारे महल बनवाये । उस काल के महलों की उपयोगिता की दृष्टि से महलों को अनेक विभागों में विभाजन किया गया था । अभी भी इनकी रीनक जैसी की तैसी है ।

मैंदातोप—

इस राजवाड़ा के सामने कुछ सीड़ियां चढ़ने के बाद गोल चबूतरे पर पहुँचते हैं । यहाँ तोप के पिछले हिस्से पर मेढे की आकृति है इसीलिए इसे मैंदातोप कहते हैं । इस तोप के ऊपर लेख अंकित है इस लेख में औरंगजेब का अधिकार और मोहम्मद हुसैन अरवी की कारीगरी बताई गई है ।

खंदक—

खंदक की गहराई 17 मीटर है । यह खंदक अभी भी पानी से भरा हुआ है इस पर लोहे का पुल है । उन दिनों यथा समय चमड़े का पुल लगाकर आवागमन होता था । किले के ऊपर से खंदक तक ऐसा तराणा गया है कि अभी भी खंदक के ऊपर चढ़ना असम्भव है । उस समय के राजाओं ने अपने संरक्षण की सम्योचित व्यवस्था की हुई थी । इसका यह अद्वितीय उदाहरण है ।

अंधलि—

अंधलि का मतलब है अंधेरा रास्ता । खंदक को पार करके आगे बढ़ने पर आरम्भ में अंधेरा रास्ता मिलता है । बिना उजाले के रास्ता पार करना कठिन है । फिर भी अंधेरा रास्ता पार करने समय दीवार का सहारा लेते हुए ऊपरी भाग पर आ जाये तो छोटे रास्ते पर लोहे का पन्ना रखा हुआ दिखता है । इस लोहे के पन्ने को तपाया जाता है इसीलिए कि शत्रु का प्रवेश किले में न हो सके ।

गणेश मन्दिर—

कुछ ही सीढ़ियाँ चढ़ जाने के बाद कमान वाले दरवाजे से आगे बढ़ते ही बाईं ओर एक छोटा सा मंदिर दिखाई देता है। इस मन्दिर में गणेश जी की मूर्ति है। गणेश जी की सूँड़ दायाँ ओर है। इसके बाद बारादरी की ओर बढ़ते हैं। इसके पहले सीधे हाथ की पगडंडी शुद्ध पानी की ओर ले जाती है। जहाँ पानी पीकर पर्यटकों की थकान दूर हो जाती है।

बारादरी—

बारह कमान वाली ईमारत पत्थर और चूने से बनवायी गई है इसकी भव्यता प्रत्यक्ष देखने पर ही ज्ञात हो सकती है। इसके पीछे मोती टाका जो स्वच्छ जल का जलाशय है जिसमें सभी ऋतुओं में पानी जमा रहता है।

सन्त जनार्दन स्वामी की पादुकाएं

सोलहवीं शताब्दी के संत जनार्दन स्वामी की पादुकाएं यहाँ स्थापित की गयी हैं। अषाढ़ मास और कार्तिक मास के एकादश को यहाँ भाविकों का मेला लगता है।

दुर्गा तोप---

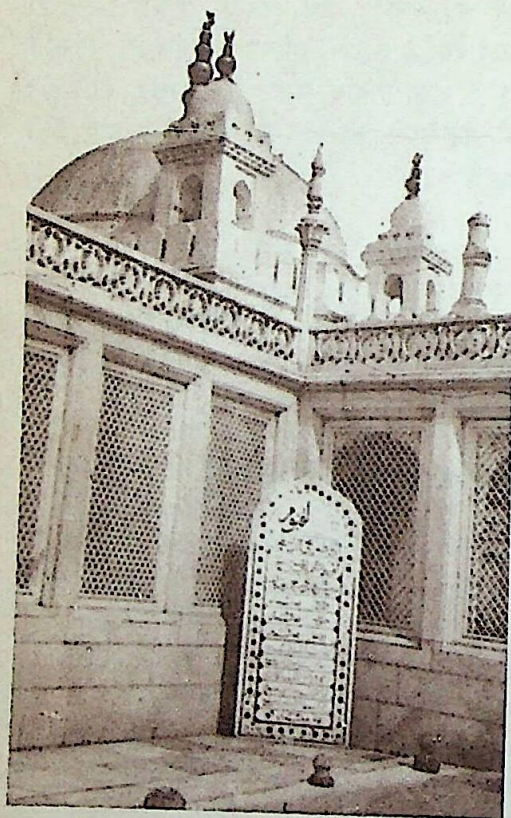
किले के ऊपर दक्षिणी भाग में दुर्गातोप है। यह तोप मेंढा तोप से दुगुनी लंबी है।

देवगिरी को देख दिल आनन्द विभोर हो जाता है। इस किले के निर्माण में बड़ी सूझ-बूझ से काम लिया गया है। दुर्ग निर्माण में स्थान का चयन प्राकृतिक सौंदर्य और संरक्षण की दृष्टि से बेजोड़ है देखने पर ऐसा लगता है कि भारत वर्ष में इस किले का स्थान सर्व प्रथम है।

खुलदाबाद

दौलताबाद से 12 कि० मी० दूरी पर और ऐलोरा से 4 कि० मी०, औरंगाबाद की ओर छोटे पहाड़ पर छोटा सा ग्राम है। पहले इसे "भद्रावती" कहते थे। कुछ सदियों पहले "राजा" कहने थे। जिसका अर्थ स्वर्ग है।

उद्ग में भी खुल्दाबाद (स्वर्गग्राम) कहते हैं जहाँ महाराजा और संत महात्माओं की समाधियाँ हैं। कब्रें हैं। खुल्दाबाद का प्रवेश द्वार कमान में से गुजरते ही



सीधे हाथ को औरंगजेब की कब्र है किन्तु औरंगजेब का देहान्त अहमद नगर में हुआ था। अहमद नगर औरंगाबाद से 140 कि० मी० है। किन्तु औरंगजेब की इच्छानुसार उसकी कब्र उसके गुरु की कब्र के पास दफनायी गई। औरंगजेब ने कुरान शरीफ लिखकर कुछ पैसा जमा किया था। इसी प्रकार कुछ टोपियाँ सीकर जो स्वावलंबन से पैसे जुटाये थे, इन्हीं पैसों से उसके जुलूस और मौत की व्यवस्था की गई थी। एक भारत सम्राट के स्वावलम्बी जीवन का आदर्श जनता को स्वावलंबन का पाठ सिखाये बिना नहीं रहता। निजाम हैदराबाद ने कब्र के बाजुओं में संगमर-

मर की जालियाँ लगा दी। किन्तु औरंगजेब ने अपने सादा जीवन से यह सिद्ध करा दिया कि उसकी अपनी कब्र मामूली व्यक्ति जैसी हो। यहाँ मलिक अम्बर की भी कब्र है। जर्जरी बख्श एक संत थे। हर साल यहाँ मेला लगता है जिसे “खुल्दाबाद का उत्सव” कहते हैं।

म्हैसमाल

खुल्दाबाद से ऊपर की ओर 12 कि० मी० दूर पहाड़ के माथे पर यह छोटा ग्राम है। इस पहाड़ी का नाम “महिषाद्रि” है। यहाँ पर गिरिजा अर्थात् पार्वती देवी का मन्दिर है। मन्दिर के पास विश्राम धाम है। यहाँ का हवामान स्वास्थ्य कर है किन्तु पानी का अभाव रहता है।

घृष्णेश्वर—

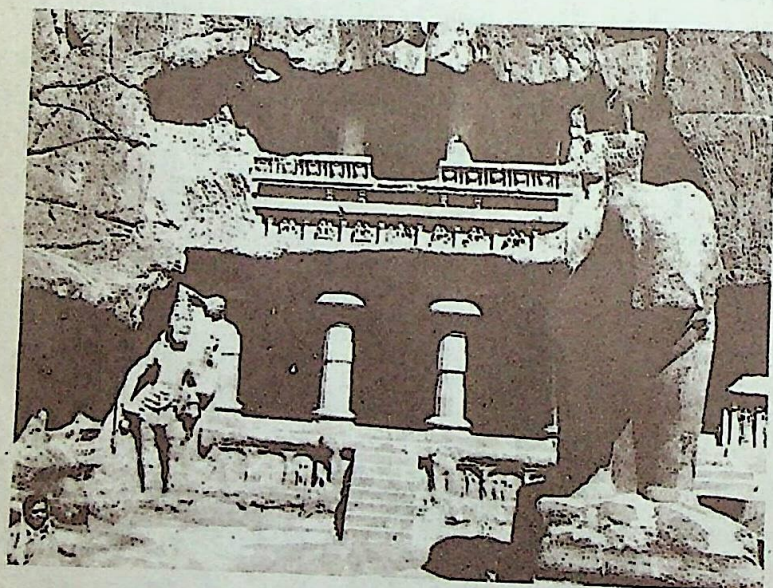
भारत वर्ष में 12 ज्योतिर्लिंग हैं, उनमें एलोरा स्थित घृष्णेश्वर मन्दिर एक ज्योतिर्लिंग है। इसे स्वयं निर्मित माना जाता है। मन्दिर की पूर्व दिशा में जो नदी बहती है उसका उल्लेख पुराणों में पाया जाता है। ऐतिहासिक दस्तावेजों से ऐसा ज्ञात होता है कि 17 वीं शताब्दी में सती अहिल्याबाई तथा सास गौतम बाई और बायजाबाई ने इसे बनवाया है। छोटे से दरवाजे में से प्रवेश करने पर, मन्दिर के आंगण में पहुंचते हैं। मन्दिर का आधा भाग लाल पत्थर का और आधा प्लास्टर का दिखाई देता है। शिखर पर सोने का कलश है पत्थरों की जुड़ाई पत्थरों को तराशकर की गई है। स्तंभ का शिल्प, साधारण है शिवग्रह में शिवजी की पिंड है। इस पिंड के सामने पार्वती जी की संगमरमर पत्थर की शुभ मूर्ति है। इस देव स्थान की व्यवस्था समाज द्वारा होती है। विद्वान ब्राह्मण पूजा पाठ के लिए उपस्थित रहते हैं। हजारों की संख्या में माघ मास की आमावस्या अर्थात् महा शिवरात्री का मेला लगता है। इस मन्दिर के आगे शिवालय तीर्थ में स्नान करके मन्दिर में दर्शनार्थी जाते हैं।

**लक्ष विनायक मन्दिर—**

घृष्णेश्वर मन्दिर से एलोरा ग्राम जाते समय रास्ते में ही ब्रॉड लगा हुआ दीखता है। इस मन्दिर में एक बड़ी गणेश जी की मूर्ति है। महाराष्ट्र में गणेशर्ज के 27 प्रसिद्ध स्थानों में इसकी गणना की जाती है।

एलोरा की गुफाएँ

एलोरा यह एक विश्व विख्यात पुरातत्व विभाग का अप्रतिभा सांस्कृतिक केन्द्र स्थान है जहाँ महान तीन संस्कृतियों का अद्वितीय समन्वय हुआ है। यहाँ पर 60-65 गुफाओं में मे करीब 35 गुफाओं को क्रमांक दिये गये हैं। क्रमांक 1 से 12 बौद्ध धर्म की 13 से 29 हिन्दू धर्म की और 30 से 34 तक जैन धर्म की गुफाएँ हैं। 35 नम्बर के ऊपरी भाग से उत्तर की ओर 1 फर्लांग दूरी पर भगवान पार्श्वनाथ 23 वें तीर्थंकर की विशालकाय नयन मनोहर पद्मास्त्स्थ मूर्ति है जो जैन धर्माश्रम समाज के अधिकार में है।



उपयुक्त बौद्ध, हिन्दू और जैन धर्म ये तीनों धर्म की गुफाएँ अपने-अपने धर्म की विशेषताएँ लिए हुए हैं। एलोरा ग्राम के निकट ही गुफाएँ होने के कारण एलोरा की गुफाएँ कहलायी जाती हैं। एलोरा जिसे भराठी में "वेरुल" कहते हैं जो एलोरा गुफाओं से डेढ़ कि० मी० दक्षिण की ओर यह एलोरा ग्राम है। एलोरा से गुफा तक 1 से 34 तीन कि० मी० है। सड़कें गुफाओं तक होने के कारण आसानी से देखी जा सकती हैं।

भारतीय पुरातत्व विशेषज्ञों का यह अनुमान है कि इन गुफाओं का निर्माण कार्य छठी शताब्दी में आरम्भ होकर 13 वीं शताब्दी तक चलता रहा। इ० स० १०० सदियों से गुफा तक 15 और 16 के बीच में राजमार्ग होना चाहिए जिसके

अवशेष अब भी बाकी हैं। अपने-अपने धर्म के अनुयायियों का पूर्व से अब तक जम-घट रहता ही है। राष्ट्रकूट वंश के राजा दन्तिदुर्ग और कृष्णराज द्वितीय इन दोनों का सम्बन्ध हिन्दू धर्म की गुफाओं से है। यह शिलालेख के आधार से स्पष्ट है। जैनधर्म की गुफाएं राजा अमोध वर्ण के साथ सम्बन्धित हैं यह सिद्ध हुआ है। संपूर्ण गुफाएं देखने में 4 घंटे लगते हैं। गुफा नं० 10, 16, 32 तीनों अत्यन्त महत्वपूर्ण गुफाएं देखने में लगती हैं सभी गुफाओं को प्रत्यक्ष देखें।

बौद्ध धर्म की गुफाएं (1 से 12)

गुफा 1 —

यहाँ हीनयानियों के भिक्षु प्रारम्भ में रहते थे। यह एक विहार है। सीधे हाथ की ओर सामने की दीवार पर छोटे-2 भिक्षु-निवास बने हुए हैं जहाँ वे ध्यान करते थे और “संल” कहलाते हैं।

गुफा 2—

कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने के पश्चात् अग्र भाग में पहुंचते हैं। दाहिने हाथ को धन-पति जंभाल की मूर्ति है। सभा मंडप ऊँचाई पर है। गर्भगृह में बुद्ध प्रलम्भापादासन में विराजमान हैं और धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा है।

गुफा क्र० 3 व 4 :—

गुफा 2 के अनुसार रचना है।

गुफा 5 :—

यह विहार 37 मी० लम्बा 18 मी० चौड़ा है। इसमें बुद्ध की सर्वश्रेष्ठ गुफा है। इसका स्थानीय नाम ‘महानवाड़ा’ है जो महानता का चोतर है स्तम्भ मादे हैं। गुफाओं के ऊपर से जल श्रोत नयन मनोहर दिखायी देता है।

गुफा 6 :—

सामने का हिस्सा गिरा हुआ है। इसकी रचना कुछ अलग ढंग की है। बुद्ध भगवान् गर्भग्रह में प्रलम्भासन से युक्त मूर्ति के रूप में दिखायी देने हैं। मुद्रा धर्म चक्र प्रवर्तन है। दरवाजे के दोनों ओर बोधिसत्व अवलोकितेश्वर और वज्रपाणि खड़े हैं। बाईं ओर तारा (लक्ष्मी) और दाहिनी ओर महामरयुरी (सरस्वती) की मूर्तियाँ हैं। इसी के वगल में मयूरपंख का गुच्छा और घड़ी होने वाले टेबल पर पंडित का ग्रंथ वाचन दर्शनीय है। यहाँ दो स्तम्भ दो अर्धस्तम्भ घटपल्लव आकार के हैं।

गुफा 7 :—

थोड़ी दूर जाने पर इस गुफा के सामने का हिस्सा दिखाई देता है। इसमें शुद्ध प्रतिभाओं की पक्ति है। पद्मपाणि, वज्रपाणि अन्य मूर्तियाँ दिखायी देती हैं।

गुफा 8 :—

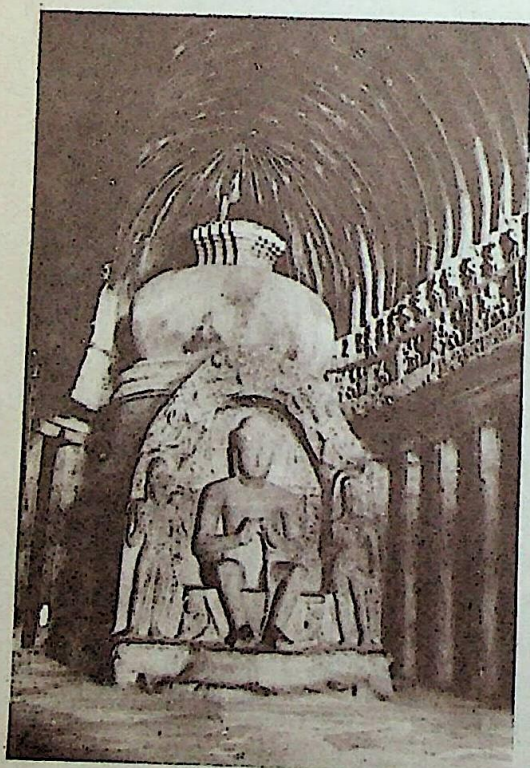
यह गुफा 9 नं० से 4 नं० की गुफा से क्र० 6 में से सीढ़िया उतरना पड़ता है। यह खाली विहार गृह है।

गुफा 9 :—

यह एक अपूर्ण गुफा है। यहाँ बुद्ध बोधिसत्व और महामयूरी (सरस्वती) की मूर्तियाँ हैं। जब हम 1० नंबर की ओर चलते हैं तो हमें धनपति जम्भाल और उनकी पत्नी 'हारिती' की मूर्ती दिखायी देती है।

गुफा 10 :—

यह बुद्ध धर्मीय चैत्यगृह है। इसे विश्वकर्मा 'या' सुतारझोंपड़ी भी कहते हैं।



गुफा की छत पत्थर की है पर लकड़ी का बना हुआ आभास होता है। इसीलिए इसे सुतारझोंपड़ी कहते हैं। वढ़ई की कुशल कारागरी को विश्वकर्मा कहते हैं। वढ़ई लोग यहाँ की मूर्ति को विश्वकर्मा नाम से पूजते हैं। यहाँ का शिल्प समूह देखने पर मन को लुभाता है। इस में खिड़की योजना प्रकाश के लिए की गयी है खिड़की के दोनों ओर गंधर्व हाथ में पुष्प लेकर उड़ते हुए दिखाये हैं। यहाँ शोभनीय स्तम्भ हैं चैत्यगृह में स्तूप और बोधिवृक्ष की रचना में फूल-पत्ते स्पष्ट दिखने हैं। बुद्ध मूर्ति का चेहरा एकदम शांत एकाग्र और चित्ता-

कर्पक है। मुद्रा धर्मचक्र प्रवर्तन प्रलम्भासन है। मुख्य गुफा से प्रदक्षणापथ अलग है। छज्जे पर सीढ़ियाँ चढ़कर जाना पड़ता है। छज्जा वाद्यवृन्द के लिए है। शिल्प आकर्षक है। छोटा सा शिलालेख है जिसमें धर्म व वचन का उल्लेख है।

गुफा 11 :—

इसका स्थानीय नाम 'दोताल' है। गुफा तीन मंजिला सी जालूम होती है। इ० स० 1876 तक नीचे की मंजिल प्रकट नहीं हुई थी इसीलिए दो मंजिला कहा गया है। दो और तीन मंजिलें खाली हैं।

गुफा 12 :—

यह तीन ताल कहलाती है। सामने खड़े होकर देखने से तीनों मंजिलों के स्तम्भ नजर आने हैं। यहाँ बोधिसत्व और विभिन्न ताराएँ खोदी गयीं तथा गुफा के अन्दर सीढ़ियाँ खुदी हुई हैं। ऊपरी मंजिल पर अलग-अलग मुद्राओं में और आसनों में मूर्तियाँ हैं जिनमें चित्रकारी का काम भी किया हुआ था।

गुफा 13 :—

यह कलाकारों का निवास स्थान मालूम होता है। गर्भगृह खाली है।

गुफा 14 :—

इस गुफा का स्थानीय नाम रावण की खाई है पर कोई अर्थबोध नहीं होता। सभा मंडप में 16 स्तम्भ हैं। दर्शनीय स्तम्भ नये हैं। अनुमान से गर्भगृह में शिव-लिंग होना चाहिए। रखी गयी मूर्तियाँ यथास्थान नहीं हैं उत्तर की ओर की दीवार देखने से (1) दुर्गा (2) गजलक्ष्मी (3) विष्णु और लक्ष्मी दिखाई देते हैं। सामने वाली दीवार पर अन्धकामुर वध (2) रावण द्वारा कैलाश हिलाने की चेष्टा (3) शिव नृत्य (4) शिव और पार्वती का खेलते दिखायी देना (5) महिषासुरमर्दिनी भी अंकित है। इस गुफा के अन्तर्गत प्रदक्षणापथ के दक्षिण भाग में आकर्षक शिल्प है। सप्त-मातृका तराशी गयी है। दाहिनी ओर वीर भद्र-शिव है। बाद में ब्राम्ह्मी माहेश्वरी कुमाठी वंणवी व राही इन्द्राणी



और चामुण्डा हैं। अन्त में गणेश, काल और काली हैं। इन सब मातृकाओं की गोद में बाल-लीलाओं में मग्न बालक बताये गए हैं। ये गुफा एलोरा की देखने योग्य गुफाओं में से एक हैं।

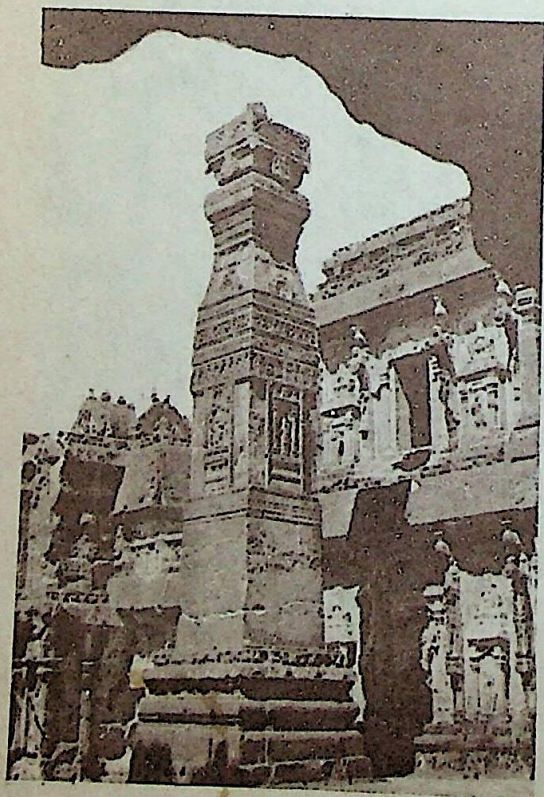
गुफा 15 :—

इस गुफा का स्थानीय नाम दशावतार है जो विष्णु दशअवतार को बोध कराते हैं। एलोरा की गुफाओं में सर्वोपरी है। आगे कुछ सीढ़ियाँ चढ़ जाने पर अग्रमंडप दिखाई देता है जिसकी दीवार पर महत्वपूर्ण लेख हैं। राष्ट्रकूटवंशीय व्यक्तियों के कई नामों का बोध होता है उनका गुफा क्र० 16 से जो सम्बन्ध है वह शिलालेख से सिद्ध होता है। यह महत्वपूर्ण शिलालेख राष्ट्रकूट वंश का परिचय कराते है। अग्र-मंडप के आगे दो मंजिला गुफा मिलती है, ऊपर की मंजिल पर प्रमाण बद्ध शिल्प है और दाहिनी बाजू से देखने पर (1) अन्धकासुर वध मूर्ति (2) शिव नृत्य (3) शिवपार्वती खेलते हुये (4) शिव पार्वती विवाह (5) रावण कैलाश हिला रहे हैं (6) माकडेयानुग्रहमूर्ति (7) गंगाधर शिव मूर्ति (8) गणेशजी (9) सरस्वती (10) गर्भगृह में शिव पिंड (11) गजलक्ष्मी (12) कार्तिकेय (13) लिङ्गोद्भव शिव (14) त्रिपुरांतक शिव (15) गोवर्धनधारी कृष्ण (16) शेष शायी नारायण (17) गजेन्द्र मोक्षमूर्ति (18) वराह अवतार (19) त्रिविनायक (20)

नृसिंह से हिरण्यकश्यप वध इत्यादि शिल्पपट बनाये गए हैं। गर्भगृह के सम्मुख लाल पत्थर का नंदी है।

गुफा 16 :—

अब हम संसार मान्य गुफा नं० 16 में प्रवेश कर रहे हैं। इस शैलगृह का नाम है 'कैलाश'। यह शिल्प कला का अद्वितीय नमूना है। यहाँ पर भव्यता, पवित्रता और शिल्पकला की चरम सीमा हो गई है। दुनियाँ के आश्चर्यों में सर्वोपरी हैं। इसका निर्माण शिखर से प्रारम्भ होकर नीचे पर समाप्त कर देना यह अपूर्व शिल्पकला जो शिल्पकार की कल्पना की चरम सीमा है। कल्पनातीत है प्रेक्षक देखते ही आनंद विभोर हो जाता



है। इस प्रकार के गुफा के निर्माण में प्रमाणवद्धता, सौष्ठव, सानु-पातिकता का कहीं उलंघन नहीं हुआ है, शिल्प का हर पहलू आश्चर्य में डालने वाला है। इसके निर्माण में अग्रिम कल्पना शिल्पकला की अपूर्व देन है। यह शिल्प सौंदर्य निखरा हुआ दिखाई देता है। कहा जाता है कि राष्ट्र कूट वंश के दंतिवर्धन के चाचा कृष्ण राज ने इ० स० 578 में कैलाश मंदिर निर्माण कराया जिसमें डेढ़ सौ साल लगे।

गुफा क्र० 25 के शिला लेख से भलिभाँति ज्ञात होता है। पहले कलश का काम अन्त में नींव तक आना मानव निर्माण शिल्प कला बेजोड़ शिल्प है, कल्पना-तीत हैं।

इस गुफा के सामने दीवार पर बहुत से शिल्प हैं जो टूटे-फूटे नजर आते हैं। अन्दर प्रवेश करने पर शंखनिधि, और पद्मनिधि, धनपती कुवेर के सेवक दिखाई देते हैं। दाहिनी ओर गणेश मूर्ति और सामने ही महिषासुर मदिनी हैं। आगे दीवार पर गजलक्ष्मी कमल पुष्प पर विराजमान है। दो हाथी अपनी सूड में जल से भरे कलश गजलक्ष्मी के मस्तक पर लगातार अभिषेक की धारा लगाये हुए हैं। उत्तर की ओर देखने पर तीन नदियों का संगम दिखायी देता है। गंगा, ममुना, और सरस्वती। गंगा का वाहन मगर, सरस्वती का वाहन हाथी, और कमल पुष्प तथा जमुना कछुए पर खड़ी है तो त्रिवेणी मगम है। इसी दृष्टि से कि पहले स्नान कर पश्चात् दर्शन हों। इसे प्रत्येक रूप में दिखाया गया है। दो बड़े हाथी दो ध्वज स्तम्भ मन्दिर की शोभा बढ़ाते हैं। यहाँ से चहुँ ओर शिल्प ही शिल्प नजर आता है।



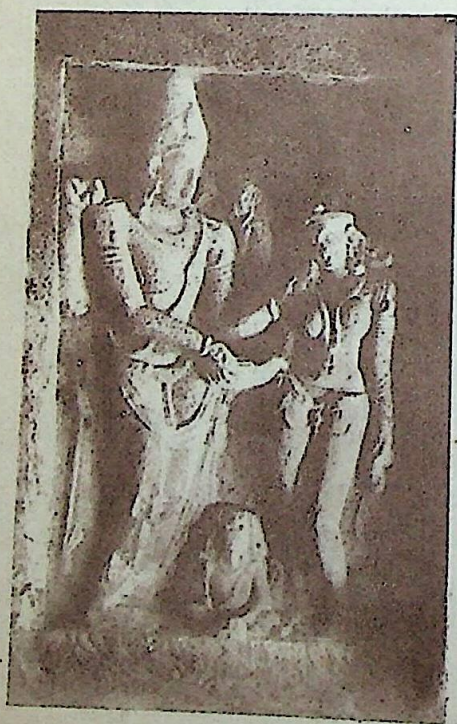
उत्तर की ओर सीढ़ियाँ चढ़ने पर कैलाश मंदिर के उपविभाग में पहुँचने हैं। यह भाग लंकेश्वर कहलाता है। शिल्प नपातुला सुन्दर है। यहाँ सूर्य चंद्र की प्रतिमाएँ हैं। मुख्य मंदिर की दीवार पर महाभारत के प्रसंग त्रिणेपतः किरान अर्जुनीयम भाग खुदवाया गया है। नीचे भगवान श्रीकृष्ण का जन्म और बाल लीला दिखायी गयी है। यह मंदिर एकमेव

पहाड़ को तराश कर शिल्प निमित्त किया गया है। हथौड़ी और छेनी तथा औजारों से ही काम किया गया है। कुछ सीढ़ियाँ चढ़ जाने पर बायें हाथ को निर्म्मांकित शिल्प मिलने हैं ---

(1) रावण का फूलों के बदन में अपना शीश चढ़ा देना (2, 3, 4) शिव पार्वती (5) सर्पधारी शिव (6) वार्तालाप में शिव पार्वती (7) कुबेर (8) कैलाश हिलाने की रावण मनीषा (9) वाणधारी शिव (10) शिव-पार्वती पट खोलने हुए हैं (11) राम-लक्ष्मण पूजा करने हुए (12) मार्कण्डेयानुग्रह है पश्चिमाभिमुख दीवार में पहला शिव पार्वती विवाह (2) अंधकामुरवध (3) त्रिपुरासुर वध मूर्ति (4) शिव पार्वती (5) लकुलेश शिव (6) लिंगोद्भव मूर्ति (7) गंगाधर शिव (8) हरीहर (9) विष्णु (10) शिव (11) ब्रह्मा (13) शिव (14) भिक्षाटन मूर्ति (15) शिव नृत्य 16, 17, 18 शिव पार्वती (19) शिव हैं।

उत्तराभिमुख शिल्प समूह :—

(1) अर्धनरनारीश्वर (2) शिव (3) रावण का लिंग उठाने का प्रयास (4)



नृसिंह अवतार (5) शेषशायी नारायण (6) गोवर्धनधारी कृष्ण (7) वावन अवतार (8) गरुडा रुद्र विष्णु (9) वारह अवतार (10) कालियामर्दन (11) शंखचक्र, गदा, पद्मधारी विष्णु (12) अन्नपूर्णा आदि हैं। यहाँ से आगे सीढ़ियाँ उत्तर जाने पर और भी शिल्प के सम्मुख हो जाने हैं। यहाँ रावण की कैलाश उठाने की चेष्टा जिसे रावणानुग्रह कहते हैं वीरासन में बैठे हुये रावण अपनी ताकत से कैलाश पर्वत उठा रहे हैं। बाजू में शिव कैलाश उठाने का आश्चर्य मुद्रा में विचार कर रहे हैं। बाजू में पार्वती भय के

मारे शिव का आश्रय लेती है। सेविकाएँ तो मानो जान लेकर भाग रही हैं। गणों को तो कोई चिंता ही नहीं उनका शिवजी के होते हुए कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता ऐसा दृढ़ विश्वास है। उपयोगी पत्थर उठाकर नीचे की ओर फेंक रहे हैं।

बंदर डरके मारे पहाड़ चढ़ रहा है पहाड़ हिलने पर पीछे मुड़कर भी देख रहा है। ऐसा मालूम होता है कि यह सबसे बड़कर सजीव शिल्प ही साकार हुआ है। मुख्य मंदिर की दीवार पर सीताहरण का प्रसंग है। सीता रथ में है और रावण रथ के साथ उठाकर ले जा रहा है। जटायू के रोकने के प्रयत्न असफल हुए हैं। थोड़ी दूरी पर रामायण के बहुत से प्रसंग बतलाये गए हैं। नंदी मंडप के सामने दो शिल्प हैं (1) महायोगी शिव (2) गजासुरवध, शिव के शांत अशांत स्थिति के दर्शन होते हैं। कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर जाने पर मुख्य मंदिर के मंडप में पहुंचते ही छत पर चित्र अंकित हैं। प्राचीन काल में अन्तर्वाह्य वज्रलोध और चित्रकारी युक्त था। आज उसी स्थिति में होता तो कैलाश की शोभा में चार चांद लग जाते। कैलाश मंदिर में सभा मंडप है जिसे रंगमहल कहते हैं। शिल्पयुक्त 16 स्तम्भ हैं। छत पर शिव नृत्य मूर्ति आकर्षक है। गर्भगृह में विशाक्त शिवलिंग हैं। गर्भगृह का प्रदक्षणा पथ है जहाँ पाँच छोटे मंदिर हैं। जगह-जगह मक्ष किन्नर गंधर्व, अप्सरायें खोदी गयी हैं। नंदी गृह की देखने के बाद ऐसे स्थान पर आते हैं जहाँ शिल्प सौंदर्य देखते ही बनता है।

गुफा 17 :—

इस मंदिर के स्तम्भ बड़े आकार के शिल्पयुक्त हैं। गर्भगृह में शिवलिंग ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, महिषासुर मर्दिनी प्रेक्षणीय हैं।

गुफा 18 :—

गर्भगृह में शिव लिंग और चार स्तम्भ हैं।

गुफा 19 :—

गर्भगृह में शिव लिंग है।

गुफा 20 :—

कुछ सीढ़ियाँ चढ़ जाने के बाद गर्भगृह में शिवलिंग, प्रवेशद्वार पर द्वारपाल और द्वारपालिकाओं की मूर्तियाँ हैं। गणेशजी, महिषासुर मर्दिनी देखने योग्य हैं।

गुफा 21 :—

इस गुफा का स्थानीय नाम रामेश्वर है। सर्व प्रथम ऊँचे चबूतरे पर नंदी के दर्शन होते हैं। गुफा के सामने दोनों कोनों में गंगा, जमुना के



शिल्प हैं जिसमें यहाँ की गंगा प्रसिद्ध है। शालभंजिकाओं की मूर्तियाँ अलग-वगल में हैं। उच्चासन पर शिवलिंग है। गुफा में उत्तर की ओर और भी शिल्प हैं।

(1) शिवपार्वती का पट खेलना (2) कटी सम प्रकार का शिव नृत्य (3) स्मृतमातृकाएँ। अन्त में श्रीगणेश, काल और काली की मूर्तियाँ हैं।

गुफा 22 :—

इसका स्थानीय नाम 'नीलकंठ' है। और नंदी है। गुफा नं० 23, 24 ये खाली गर्भगृह हैं।

गणेश गुफा :—

गुफा 24 से सीधे हाथ से रास्ता जाता है। सीढ़ियाँ चढ़ जाने पर झरने के दोनों किनारों पर गुफायें हैं। गणेशजी की मूर्ति होने के कारण गणेश गुफा कहने हैं।

जोगेश्वर गुफा :—

गणेश गुफा से एक कि० मी० दूरी पर ये गुफायें हैं एक गुफा में पार्वती देवी होने से जोगेश्वर गुफा नाम पड़ा।

गुफा 25 :—

यह गुफा विशाल है। रथ में खड़ी सूर्य की मूर्ति है। रथ में सात घोड़े हैं और सारथ्य अरुण कर रहे हैं। उषा और प्रत्युषा धनुष्य बाण लिए हुए हैं।

गुफा 26 :—

यह गुफा 21 की तरह है।

गुफा 27 :—

इस गुफा में हलधर बलराम और श्रीकृष्ण, शेषशायी नारायण वारह अवतार महिषासुर मर्दिनी हैं।

गुफा 28 :—

इस गुफा में जल प्रपात करीब 6-7 महिने रहता है। यहाँ छोटा कमरा है जो खाली है।

गुफा 29 :—

इस गुफा का स्थानीयनाम सीता की नहानी (सीता स्नान घर) है धारापुरी के एक गुफा से मिलती-जुलती हैं। मम्मूख दो सिंह बैठे हुए हैं कुछ आगे सीढ़ियाँ चढ़ जाने पर शिव को अंधकासुर का वध करने हुए दिखाया गया है। पार्वती देवी अपने ठाठ से बैठी हुई हैं। आगे जाने पर शिवजी का नृत्य दिखाया गया है। इसी

के सामने जमना और लकुलेश दो शिल्प मिलते हैं। लकुलेश के सम्मुख यज्ञ कुण्ड है। आगे जाने पर शिवलिंग मिलता है। द्वारपाल ऊंचे हैं। द्वार-पालिकायें प्रमाण ब्रह्म-सुशोभित हैं। इसके आगे शिखरपावती विवाह प्रसंग नजर आता है। सामने यज्ञकुण्ड है। थोड़ी दूरी पर रावण शिवजी का निवास स्थान जो कैलाश की हिलीयों में हुआ बताया गया है।

जैन धर्म की गुफाएं क्र. 30 से 34 तक

गुफा 30 :—

यह गुफा 16 नंबर की कैलाश गुफा से मिलती-जुलती होने से इसे 'छोटा कैलाश' कहते हैं। स्तम्भों और छतों पर कमल पुष्प बने हुए हैं। भगवान महावीर के चारों ओर मूर्तियां हैं।

गुफा 31 :—

इसका शिखर कैलाश की तरह है। इसमें अन्य जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां हैं और साथ ही शाशन देवतायें भी हैं।

गुफा 32 :—

इसे इन्द्र सभा कहते हैं। यह एक अनीव महत्वपूर्ण गुफा है। इसके अन्दर एक मानस्तम्भ, कैलाश द्वार की बाईं ओर था जो गिर चुका है। दायीं ओर एक बड़ा हाथी है।



यह दा मंजिल गुफा है। पहली में दो प्रवेशद्वार और मध्य भाग में मंदिर है। मंदिर में चारों ओर चौमुखीनंदीश्वर की मूर्तियां हैं। इसके बगल में मंदिर के गर्भ-गृह में महावीर, पार्श्वनाथ तथा वाहुवली जी की पुरातन मूर्तियां हैं। पीछे की ओर एक हाल है जिसमें दोनों ओर चंवरधारी द्वारपाल हैं। दायीं ओर मंदिर में पा नाथ, गोमटेश्वर मातंग और सिद्धामिका की मूर्तियां हैं।



ऊपर विभाग में महावीर
पाश्वनाथ और बाहुवली जी की
मूर्तियाँ हैं। दूसरी मंजिल इन्द्रो
की मूर्तियाँ होने से इन्द्रसभा
कहते हैं। यह एक शिल्पकला का
अद्भुत नमूना है। इसमें हाथी पर
विराजमान इन्द्र की मूर्ति है। शेर
पर इन्द्रायणी है शिरोभाग में आन्न
वृक्ष है। दायीं, बायीं ओर सेवक
हैं। छत पर उच्च कोटि की चित्र-
कला है।

गुफा नं० 32 से होकर क्र० 33
गुफा की ऊपरी मंजिल में जाने का
रास्ता है।

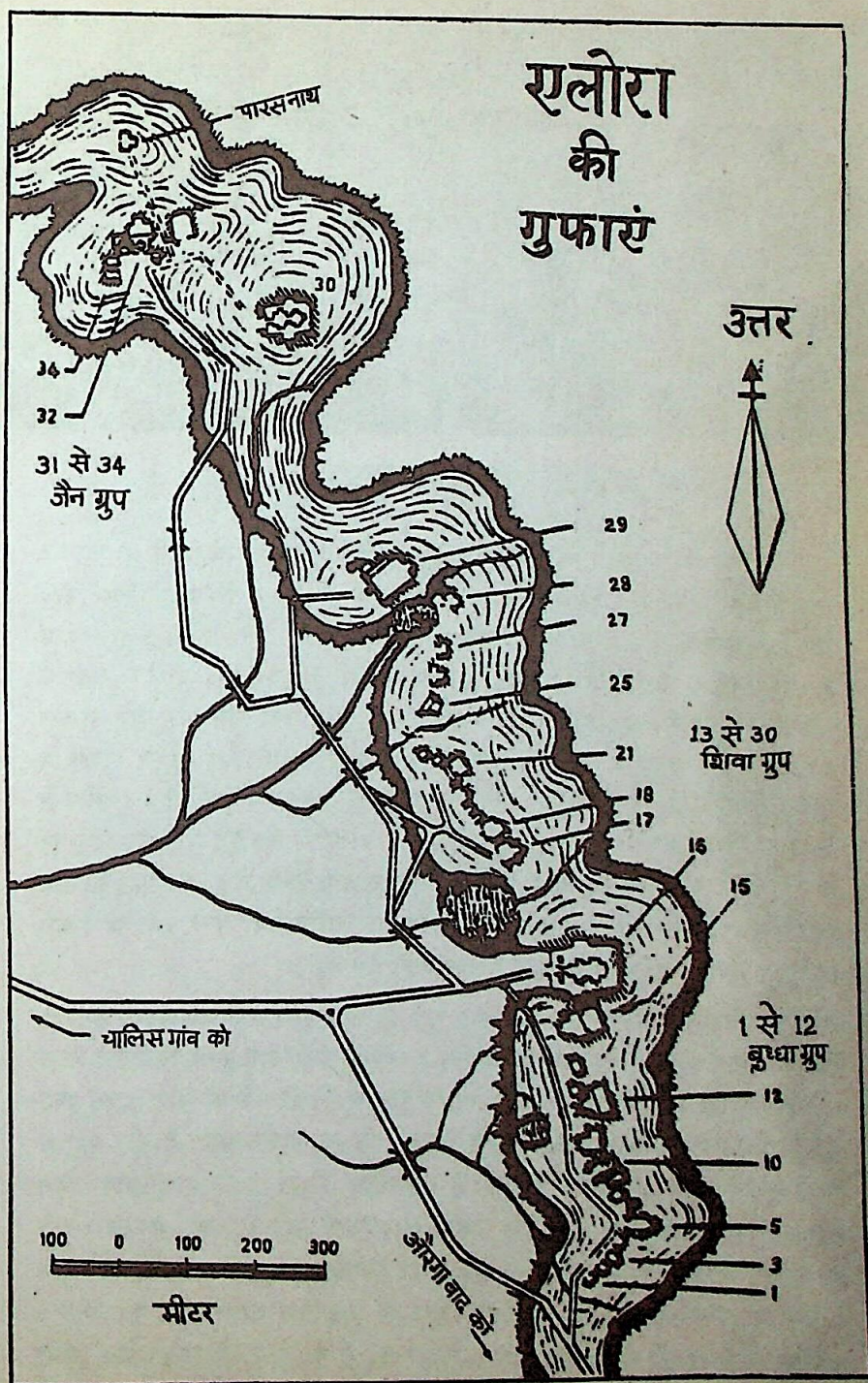
गुफा 33 :—

यह दो मंजिला गुफा है।
इसमें भी भगवान महावीर और
अन्य जैन तीर्थकरों की तथा इन्द्रों

की मूर्तियाँ हैं। 'इसके सभी स्तम्भ अद्भुत शिल्प कला के नमूने हैं। यहाँ पर
ग्याहरवीं और बारहवीं शती के चित्र कलाओं के अवशेष अब भी हैं। इसी गुफा से
34वीं गुफा की ओर जाने का रास्ता है। 34 नंबर की गुफा अपूर्ण है।

नोट :—16 नंबर की गुफा से 1 कि० मी० की दूरी पर अहिन्यावाई कुण्ड
के पास पाश्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल है जहाँ नवीनतम अतिमुन्दर काँच का जैन
मंदिर है।







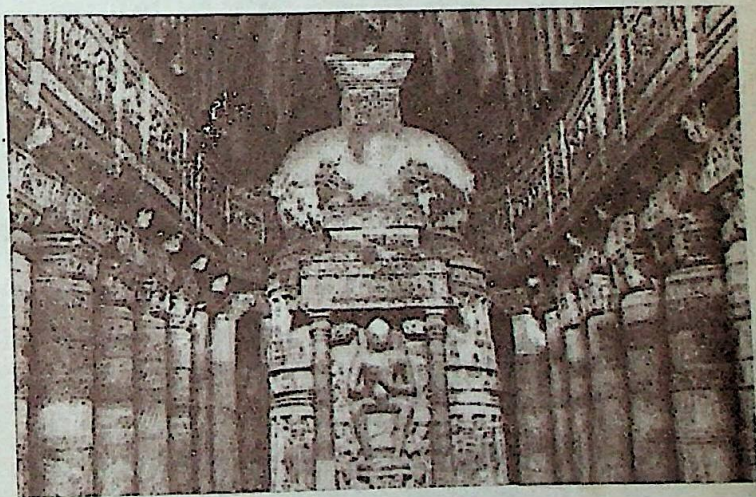
अजन्ता

औरंगाबाद शहर से 110 कि० मीटर दूरी पर उत्तर दिशा में अजन्ता की जग प्रसिद्ध गुफाएं हैं। रेलवे के जलगांव स्टेशन से जल गांव औरंगाबाद एस० टी० मार्ग पर अजन्ता है। जलगांव से अजन्ता 60 कि० मीटर है। यहाँ कुल 30 गुफाएं हैं। विद्वानों का कहना है कि यहाँ की गुफाओं का निर्माण कार्य शिला लेखों के आधार पर इ० स० दूसरी सदी से सातवीं सदी तक चला होगा। अजन्ता एक ग्राम है। इसी ग्राम के नाम से अजन्ता की गुफाएं नाम पड़ा। जिस पहाड़ में गुफायें खोदी गयीं वह पहाड़ घोड़े के नाल की तरह आकार दिये हुए है समीप में "वधोरा" नाम की नदी है। इसमें पानी का अभाव है। सब गुफाएं बौद्ध धर्म की हैं। कारीगर कौन थे। भिक्षुक कितने थे। इन्होंने जगह क्यों छोड़ दी। यहाँ के चैत्य गृहों में पूजा कितने दिन चलती रही। भारत का सांस्कृतिक केन्द्र कब और क्यों निर्मनुष्य हुआ ? इतिहास में कोई उल्लेख नहीं है।

इतिहास बताता है कि 161 वर्ष पूर्व इ० स० 1819 में जब मद्रास सेना के ब्रिटिश सैनिक शिकार हेतु आये थे उन्होंने इस जगह का ध्यान पूर्वक निरीक्षण किया सो उन्हें गुफायें दिखाई दीं। वर्षा के कारण कुछ खुली हो गई थीं और बहुत ढकी हुई दिखाई दीं। इनको देखने का केन्द्र स्थान जिसे व्यू पॉइन्ट कहते हैं और यहाँ से सारी गुफायें सहज ही में दिखाई देती हैं। अप्रतिम शिल्प कला का निर्माण जिन कलाकारों ने किया उनकी पूरी-पूरी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा सकता। इसी प्रकार इन गुफाओं को संसार के सम्मुख लाने का काम अर्थात् शोध लगाने वाले सैनिकों को धन्यवाद देना ही पड़ता है। यहाँ की प्राकृतिक शोभा नयन मनोहर है। 30 गुफायें हैं जिनमें 5 चैत्यगृह व 25 विहार गृह हैं चैत्य से जहाँ सामुदायिक पूजा और विहार गृह से भिक्षुओं के निवास स्थान का लेना होता है।

बौद्ध धर्म में 2 पंथ हैं (1) हीनयान (2) महायान। हीनयान मूर्ति पूजा नहीं मानते महायान मूर्तिपूजक हैं। हीनयानियों ने मूर्ति रहित स्तूप की पूजा प्रारंभ की और महायानियों ने मूर्ति पूजा। यही दोनों में फर्क है।

गर्भ गृह में अकेलीया स्तूप के साथ मूर्ति हो तो महायान गुफा और मूर्ति न हो तो हीनयान पंथी गुफा कहेंगे। गुफायें अपूर्ण होने से हीनयान की कितनी और महायान की कितनी। यह कहना असंभव है। पिलास, छेनी, हथौड़ी इन तीनों औजारों की मदद से गुफाओं की निर्मिती हुई। खोदते समय दीवार ऊंची या नीची रखना होता। लगा हुआ प्लस्तर दीवार को अधिक चिपके ऐसी व्यवस्था है। प्लस्तर में 3 चीजें हैं (1) मिट्टी (2) गोबर (3) चावल के छिलके। प्लस्तर पर चूना, चूने के बाद लाल रंग से वही रंग रेखायें निकाली गई हैं और उनमें भिन्न-भिन्न रंग भरे गये हैं। 740, वर्षों से आज तक इन चित्रों की नवीनता ज्यों की त्यों है।



चित्रों के विषय निम्नोक्त हैं

(1) राजकुमार सिद्धार्थ की बाल्यावस्था। बोधिसत्व के चित्र, भूमिति के डिजाइन्स और जातक कथायें हैं। जातक शब्द पुनर्जन्म के अर्थ में हैं। बुद्ध ने क्यों जन्म लिया इन जातकों की संख्या 550 है।

उद्बोधक अप्रतिम जातकों का विशेष रूप से चित्रण हुआ है।

गुफाओं को देखने का प्रवेश शुल्क है शुक्रवार को बिना शुल्क देखने के लिये खुला रहता है चित्रित गुफाओं में बिजली की व्यवस्था की गयी है जिसका शुल्क अलग से देना होता है। फोटोग्राफी का शुल्क भी अलग से दें।

गुफा 1—

यह एक विहार है। वरामदा, सभामण्डप, अन्तराल गर्भ गृह सभी ठीक

हालत में है। गर्भ गृह की बुद्ध मूर्ति संसार की मूर्तियों में सर्वश्रेष्ठ है। इस मूर्ति के चेहरे पर सामने से दोनों बाजूओं से निरीक्षण करने पर मूर्ति तीन प्रकार के (भाव) ध्यान को बतलाती है। अर्थात् ध्यानादस्था और विभिन्न भाव मुद्रा का स्वरूप सम्मुख आता है। सभामण्डप के तीसरे स्तम्भ पर चार हिरनों के शरीर भिन्न, किन्तु मुख सबका एक ही है। यह एक ब्रेजोड़ शिल्प कला है।



बायें हाथ से गुफा देखने में मुविधा के कारण बायें हाथ से देखें। प्रथम प्रवेश द्वार के बाजू की दीवार पर शिषि का जातक है। महाराजा शिषि ने एक पक्षी को अभयदान दिया था उनके करुण-हृदय ने आश्रित पक्षी के वजन के बराबर अपना मांस, शिकारी को दिया। इस कल्पना चित्र में तराजू, कुछ दासियां शिषी का पुत्र आदि दिखाया है। इसके पश्चात् बुद्ध ने अपने भाई नन्द को धर्मदक्षिा देकर भिक्षु बनाया है। नन्द ने राज बैभव छोड़कर भगवे वस्त्र परिधान किये हैं। नन्द पत्नी सुन्दरी नाम की थी। विरह के कारण मूर्छित हुई है। बाद में शखपाल जातक की कथा मिलती है।

एक नागराज रास्ते के बाजू एकांत में पड़े थे और कुछ शिकारी शिकार नहीं मिला इसलिये नाराज हो गुजर रहे थे। नागराज शिकार है। ऐसा जानकर उन्हें खींच रहे थे। इनकी वेशभूषा विविध प्रकार की बतलायी है। अलार नामक व्यापारी ने बैल गाड़ी से जाते समय देखा और नागराज की दया आयी तथा शिकारी को बहुत धन देकर नागराज की पीड़ा दूर की। एक स्त्री का हृदय ऐसा आकर्षक है कि उसका पार्श्व भाग ही दीखता है। बैठने का ढंग कुछ ऐसा है कि हमारी ओर तो देखती नहीं पर हमसे मानो बातें कर रही है यह अचरज में डालने वाला चित्र है। इसके बाद हम देखते हैं कि महाजनक जातक के ३ विभाग होते हैं।



(1) राज दरवार में राज-
खिन्न मुद्रा में है (2) रानि-
मानो उन्हें समझा रही है।
सम्मुख ही नर्तकी नृत्य कर रही
है। विभाग 2 में राजा बैठे हुए
उपदेश की याचना कर रहे हैं।
तीसरे में घोड़े पर सवार हो नगर
द्वार से निकल रहे हैं। विदायी-
समय की शोक मग्न अवस्था
दास दासियां दिखा रहे हैं।
सामने जहाज समुद्र में डूबते
दिखाया गया है। सम्मुख स्तम्भ
पर बलशाली दो बैलों की टक्कर
का दृश्य है।

पश्चिमाभिमुख दीवार पर बुद्ध हाथ में भिक्षापात्र लिये हुए बैठे हैं। सामने
ही भक्तगण भी हैं। राजपुत्र स्नान
कर रहे हैं आदि।

बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र
जग प्रसिद्ध माना गया है। इनका खड़ा
रहने का आकर्षक ढंग सुवर्ण जैसी
कांति हाथ में नील कमल एक दम
प्रशांत मुद्रा जो मन पर असर कर
जाती है। बाजू में पद्मपाणि की पत्नी
निराशा से खड़ी है। यहाँ एक मिथुन
मद्यपान मस्त दिखाया है। अन्तःपुर में
बुद्ध बोधि वृक्ष के नीचे ध्यान साधना
में मग्न है। मार राक्षस आक्रमण हो
रहा है। साथ ही साथ असंख्य बुद्ध
बताकर श्रावस्तिका चमत्कार दर्शाया
है। सभा मण्डप में पहुंचने पर अन्त-
राल में दीवार पर बज्रपाणि का चित्र
देखते हैं जहाँ आभूषणों का महान
आकर्षण है। भौतिक माला से सुसज्जित मुकुट बड़ा ही सुहावना है। बाजू में अजंता
की काली रानी स्त्री जिसकी शरीर रचना और आँखों की लाली देखते ही बनती





है। आगे जाकर चंपेय जातक की कथा मिलती है जो शंकपाल जातक से मिलती जुलती है। नागराज को जादू-गर पकड़ता है यह खेल राजा के सम्मुख हो रहा है। नागराज भी पुत्र के सम्मुख खड़ी है और नागराज अपना प्रवचन सबको सुना रहे हैं आदि।

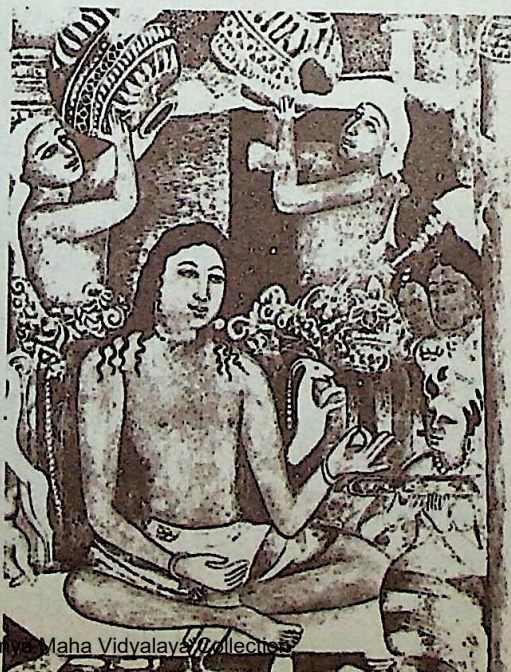
प्रवेश द्वार के सीधे हाथ सभा मण्डप की दीवार पर "राजसभा" दिखायी गई है। इसके बारे में विद्वानों का अभिप्राय है कि यह राज दरवार हमरा पुलिकेशी का होना चाहिए।

गुफा 2—यह विहार गृह है। वरामदे के छत पर मनोरंजक चित्र हैं। जंभाल हारिती के शिल्प हैं। प्रवेश करने पर वार्यें ह्राथ "हंसजातक" कथा के चित्र

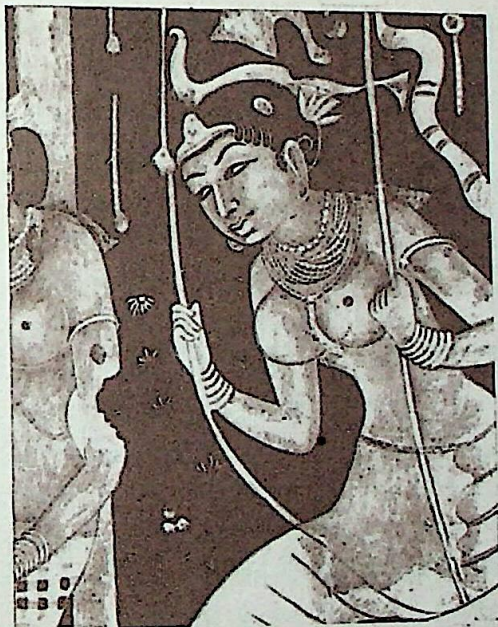
हैं पश्चात बुद्ध जन्म कथा दिखायी है। इसके बाद रानी महामाया का स्वप्न जो राजा को कह रही है। भगवान का तुपित स्वर्ग में जन्म लेने का चिंतन और पंडित स्वपनार्थ कह रहा है ये सारे प्रसंग एक साथ है।

महामाया अधोमुख किये हुए है।

नीचे की ओर लुंविनी उद्यान में बुद्ध जन्म के साथ ही साथ जन्म के पश्चात सप्त पद चलने का परिचय किया गया। बुद्ध के कई चित्र के साथ सरस्वती का चमत्कार बतलाने की चेष्टा की गई है। कुछ दूरी पर दो स्तम्भयुक्त कमरे में शंखनिधि पद्मनिधि दिखाये हैं। छत और दीवारों चित्रों में परिपूर्ण हैं। अंतराल में श्रावस्तीका अचरज दिखाया गया है। एक चित्रपेला



यह है कि बुद्ध भगवान ने एक ही समय में अपने शरीर द्वारा भिन्न-भिन्न जगहों पर दर्शन कराया है यही श्रावस्ती के घटना का चमत्कार कहलाता है। बुद्ध गर्भगृह में हैं। सोधे हाथ धनपति जम्भाल और इसकी पत्नी वच्चों के साथ है। इसी के नीचे शिक्षक



हाथ में छड़ी लेकर छात्रों को अधिकार में लाने की चेष्टा कर रहे हैं। इसके बाद दीवार पर 3 जातक दोखते हैं जिसमें विदुर पंडित का जातक श्रेष्ठ है। नागराज कन्या झूला झूल रही है। यक्ष सौन्दर्य देख मुग्ध होता है। राजसभा और उसमें होने वाली चर्चा आदि जातक प्रसंग हैं। नीचे की ओर लघु जहाज है। जहाँ पूर्ण विद्वान् जातक कथा चित्रित हैं इसके साथ और भी जातक कथाएं हैं किन्तु अस्पष्ट है। यहाँ नर्तकी का शरीर सौन्दर्य ऐसा मोहक है जो अजंता का सबसे बड़ा आकर्षण है।

गुफा नं. 3—

यह खाली गुफा है।



गुफा नं. 4—

इसमें सादे स्तम्भ हैं। प्रवेश द्वार के दोनों ओर आकर्षक और मनोल्हादक शिल्प हैं किन्तु अपूर्ण हैं।

गुफा नं. 5—

कुछ सीढ़िया उतर जाने पर गुफा के प्रवेश द्वार के दोनों ओर शाल भजिकाएं सुशोभित हैं।

गुफा नं. 6—

अजन्ता की सम्पूर्ण गुफाओं में यह गुफा दो मंजिला है। यहाँ के स्तम्भ साधारण, गर्भगृह में बुद्ध, सामने तोरण हैं। ऊपर की मंजिल पर वज्रलिपित शिल्प और सुन्दर चित्र आज भी दिखाई देते हैं।

गुफा नं. 7—

इस गुफा की रचना आकार और स्तम्भ भी भिन्न आकार के हैं।

गुफा नं. 8—

इस गुफा में विजली की व्यवस्था है।

गुफा नं. 9—

यह मूर्ति रहित हीनयान पक्षियों का चैत्यगृह है। सामने ही स्तूप हैं और चित्र समूह बाद का मालूम होता है।

गुफा नं. 10—

अजन्ता के पाँच चैत्य गृहों में विशाल चैत्य गृह है ई० सं० पूर्व दूसरी शताब्दी के शिला लेख हैं। कुल स्तम्भ 39 हैं। स्तूप विशाल है प्रदक्षणा पथ मंदिर से अलग हैं। दीवार पर बुद्ध जीवन के प्रसंग तथा एक जातक की आकर्षक कथा है। गजपृष्ठा कृति छत है। शिला लेख है। अनेक चित्र और लेख भी हैं। यह हीनयान पंथीय गुफा है।

गुफा नं. 11—

कुछ आगे चलने पर इस गुफा में कुछ ही चित्र शेष रहे हैं।

गुफा नं. 12—

हीनयान पंथीय विहार है जहाँ तीन दीवारों में भिक्षुओं के रहने के निवास हैं यहाँ पत्थरों के पलंग की योजना की गई है।

गुफा नं. 13—

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

इस विहार में भारतीय परातत्व सर्वेक्षण का स्टोर है।

गुफा नं 15—

यहाँ विहार गृह, मुख मण्डप, सभा मण्डप और गर्भ गृह में बुद्ध भगवान हैं।

गुफा नं. 16—

गुफा 15 देख लेने के बाद नीचे उतर आते हैं और नं० 16 गुफा के सम्मुख आ जाते हैं यहाँ हाथी घुटने टेके हुए सीढ़ियों के दोनों बाजू में हैं। सामने नागराज नागरानी का शिल्प है। बायें हाथ सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद यहाँ एक शिला लेख मिलता है जिससे ऐसा मालूम होता है कि इस गुफा को बनाने में वत्स गुल्म (वाशीम) के राजा वाकाटक राजाओं ने मदद की हो। इस विहार में सुन्दर चित्र, दीवारों पर जातक कथायें और जीवन दृश्य दीखते हैं। प्रथम नन्द भिक्षुक बनने का दृश्य, सेवक के द्वारा मुकुट राजगृह में भेजते समय नन्द पत्नी ने देखा और अपनी मृत्यु पसन्द की। चित्र में मृत्यु पूर्व की स्थिति है। यहाँ सेविकायें और उनकी वेश-भूषा आधुनिक अस्पताल की परिचारिकाओं के समान दीखती हैं। इसके बाद नन्द के नाराजी के खण्ड (विविध प्रसंग) दीखते हैं। एक महान राजमहल के स्पष्ट चित्र दीखते हैं। यहाँ आठ बुद्धों की जानकारी होती है। गौतम के पहले छः बुद्ध हुए पश्चात सातवें गौतम और आठवें बुद्ध मंत्रय नाम के होंगे जो अवतार धारण करेंगे। यहाँ चित्र लेख है और लेखों में नामों का उल्लेख है। दीवार पर कोने में दो गन्धर्व हैं जो हवा में उड़ते दिखाये गये हैं। यह चित्रकारी चातुर्य पूर्ण है। गन्धर्वों की विशिष्ट आँखों की रचना के कारण विशालाक्षी मीनाक्षी कहना उचित होगा। आँखों का काजल मानों आजकल का काजल लगाया है ऐसा प्रतीत होता है। हस्ती-जातक, सुत्तसोम जातक कथा व शेष अस्पष्ट हैं। अगली दीवार पर बुद्ध की वाल्या-वस्था के प्रसंग दीखते हैं। विद्यार्थी बुद्ध गुरु से शिक्षा का पाठ लेने हुए और धनु-विद्या का पाठ लेते हुए दीखते हैं। माता महामाया और पिता शुद्धोधन भी चित्र में दिखायी देते हैं। बुद्ध जब ध्यान में थे तब सुजाता नाम की एक स्त्री ने पायसदान दिया था। यह चित्र में दिखाया गया है। विशेष यह है कि इसके शिल्प मनोछन को उठा रहे हैं जो अत्यन्त सजीव और आकर्षक हैं छत पर लकड़ी की प्रतिकृति पत्थरों में बनी दिखाई देती है। आगे जाने पर बड़ा सा जलाशय दीखता है।



गुफा नं. 17

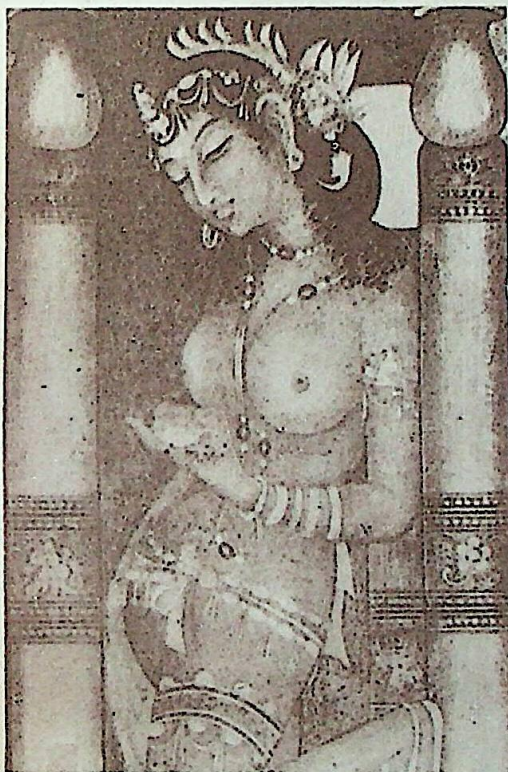
यह विहार जातक कथाओं से भरपूर हैं। जिसमें जातक कथायें बुद्ध जीवन के प्रसंग, व्यक्ति चित्र हैं। वरामदा भी चित्रों से परिपूर्ण हैं। बायें हाथ दीवार पर बड़ा चक्र है। साथ-साथ वेशांतर जातक कथायें चित्रित हैं। दरवाजे के सामने छत पर 6 अप्सरायें हैं गर्भा नृत्य कर रही हैं। दीवार पर भी अप्सरा चित्रित हैं, इसी के कोनों में देव-दत्त ने छल की भावना से मस्त हाथी को बुद्ध की ओर छोड़ा था किन्तु हाथी ही नत मस्तक होना पड़ा। गुफा के अन्दर बायें हाथ छदंत जातक कथा चित्रित है। तालाव के निकट बहून हाथी दिखाये गये हैं। एक बालक हाथी बहुत ही मुन्दर है। सारा जंगल पौधों और वृक्षों से भरा है। तालाव में कमल गुप्प मनोहर दीखते हैं। स्वच्छन्द विहारों में इस कथा से संबन्धित सूत्रों में ग्रंथे मालूम होते हैं।



इसके बाद महा कवि जातक की कथा है। बन्दर अपने भाई बन्दर के लिए उन्हें फायदा पहुंचाने में त्याग करते हुये दिखायी देता है। इसके उपरान्त जातक कथा है। दो हंस ऊंचे आसन पर हैं। सम्मुख सब लोग बोधिसत्व हंस का व्याख्यान बड़े ही

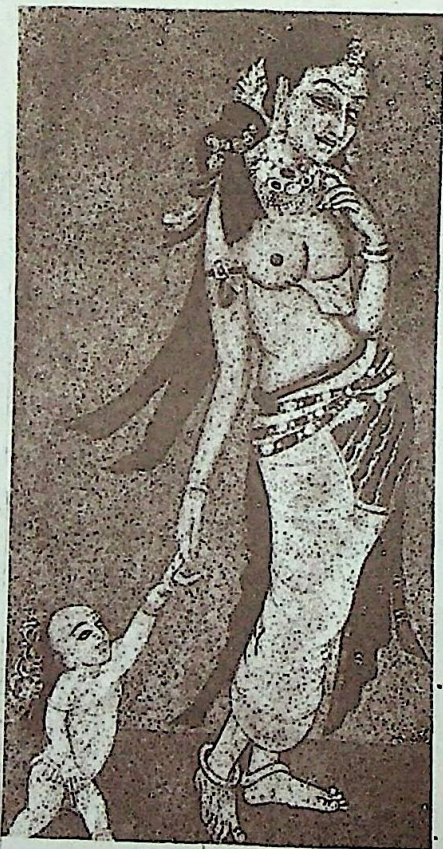
चाव से सुन रहे हैं। इसके बाद देशांतर जातक प्रसंग चित्रित हैं। इसमें आकर्षक चित्रकारी है। जजुक नाम के लक्ष्मण के चेहरे के भाव देखकर तत्समभाव बनते हैं इसके आगे महाकवि जातक की कथा और भी चित्रित हैं।

सम्मुख दीवार पर सुत्तसोम जातक चित्रित किया गया है जंगल शिकार की व्यवस्था, और विविध प्रकार के पक्षीगण अंकित हैं। अंतराल की दीवार पर प्रेक्षणीय चित्र मदर एण्ड

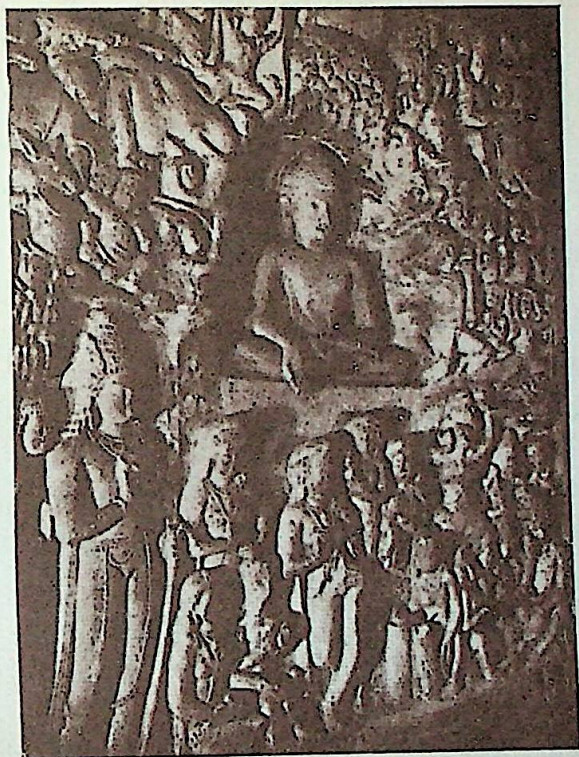


चाईल्ड के नाम से पहचानते हैं जो बुद्ध पत्नि यशोधरा और पुत्र राहुल हैं। और भी गर्भ गृह में बुद्ध के सामने दो सेवक दीपक लिये हुए हैं। दोनों की वेशभूषा और ही ढंग की है।

इसके पश्चात मातृ पोषक कथा दिखायी देती है। बोधिसत्व हाथी का जन्म लेते हैं। इस कथा में करुण रस और मातृ प्रेम की चरम सीमा है। कोने में रामायण के श्रवण की कथा से मिलती जुलती शाम जातक नाम की कथा है। इसके बाद महिष जातक का विनोदपूर्ण ढंग से चित्रण हुआ है। पूर्ण दीवार पर सिंहलावदान के प्रसंग हैं। हथियार भिन्न-2 प्रकार दीखते हैं यहीं अर्ध स्तम्भ पर एक राजकन्या वेश भूषा में मग्न बताई है। हाथ में आईना (दर्पण) और मौलिक (मोती) माला का चित्रण एक अनमोल चित्रकला का नमूना है जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो असली मोतियों की यह मौलिक माला ही है। यह है पूर्व कालीन चित्रकला। इसके बाद शिबी और हिरन सम्बन्धित जातक कथा है। यहां की जातक कथायें व्यक्ति चित्र कलायें एक दूसरे से बड़ी-चढ़ी हैं। छत का दृश्य कपड़े का छत सा ही मालूम पड़ता है। मुर्गों की लड़ाई, पहलवानों की कृश्टियों, बंलों की टक्करें, किन्नर आदि प्रेक्षणीय हैं।



गुफा नं. 18—



यह छोटा सा विहार है जिसमें पानी की टाकी (टाका) हैं।

गुफा नं. 19—

स्तूप के साथ मूर्ति है इस-लिए महायान पंथ के अनुयायियों का चैत्य गृह है। छोटा मुख मण्डप और सामने का हिस्सा आक-पंक है। प्रवेश करते ही सामने स्तूप हैं। स्तंभों पर विविध प्रकार के डिजाइन्स हैं। प्रदक्षणापथ में चित्र और छत पर लकड़ी की प्रतिकृति हैं।

गुफा नं. 20—

यह एक विहार गृह है जहाँ वरामदा सभामण्डप



है गर्भगृह में बुद्ध मूर्तियाँ हैं। पत्थरों में लकड़ी के काम की प्रतिकृति है।

गुफा नं. 21—

आगे सीढ़ियाँ चढ़ जाने पर सामने ही गुफा है। बरामदे में आकर्षक-शिल्प और सभा मण्डप के बायें हाथ चित्रकारी की हुई है।

गुफा नं. 22—

गर्भ गृह में बुद्ध मूर्ति, चंवरधारी दो सेवक और मानव बुद्ध संख्या में 7 हैं।

गुफा नं. 23—

बड़ा विहार गृह है किन्तु अपूर्ण है।

गुफा नं. 24—

अपूर्ण गुफा है।

गुफा नं. 25—

कुछ सीढ़ियाँ चढ़ जाने पर अपूर्ण गुफा मिलती है।

गुफा नं. 26—

यह एक चैत्य गृह है। शिल्प कला सुन्दर है। चैत्य देखने योग्य है शिलालेख तथा बुद्ध मूर्ति है। सामने स्तूप दीखता है। प्रदक्षणा पथ में बुद्ध का महा निर्वाण का महान शिल्प है। पूर्ण दीवार शिल्प कला से युक्त और चित्रों के अवशेष हैं। छत में लकड़ी के काम की प्रतिकृति हैं।

गुफा नं. 27—

यह एक साधारण विहार है।

गुफा नं. 28—

यहाँ विहार है किन्तु रास्ता कठिन है।

गुफा नं. 29—

गुफा नं. 20 और नं. 28 के बीच में अपूर्ण चैत्यगृह है रास्ता नहीं।

गुफा नं. 30—

यह गुफा इ० स० 1956 में उपलब्ध हुई जो क्र० 15 और 16 के बीच में छोटा सा विहार है।



पर्यटकों के लिए साधनों की जानकारी

औरंगाबाद—

क्षेत्र—15.89 वर्ग किलो मीटर

जनसंख्या—3 लाख से अधिक ।

सागर से ऊंचाई—630 फीट ।

बरसात सर्वसाधारण 600 से 800 मि० मी० ।

यात्रिगण आगमन काल—सितम्बर से अप्रैल तक ।

पोषाक—जाड़े के दिनों में गर्म कपड़े और अन्य मौसम में सूती कपड़े ।

भाषाएं—मराठी, हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी ।

औरंगाबाद से एलौरा 28 कि० मी० (बीच में दौलताबाद 10 कि० मी०

और दौलताबाद से 10 कि० मी० खुल्दाबाद है)

औरंगाबाद से अजंता 109 कि० मी० की दूरी पर है ।

सुविधाएं—

हवाई जहाज—बम्बई से औरंगाबाद (दिन में एक बार सीजन में दो बार)

बम्बई से औरंगाबाद, उदयपुर, जयपुर, आगरा होते हुए दिल्ली ।

रेलवे—

मनमाड़ क्राचीगुड़ा लाइन पर अजंता एक्सप्रेस और पैसेंजर गाड़ियां हैं ।

उत्तर भारत में आने जाने वाले यात्रियों को मनमाड़ पर गाड़ी बदलना चाहिए ।

सड़कें—

औरंगाबाद आने के लिए बम्बई उत्तर भारत आदि शहरों की ओर से आने के लिए सुगम सड़कें हैं । एस० टी० आदि । यात्रियों को ऐतिहासिक स्थानों तक पहुंचाने के लिए बसें, टैक्सी, मोटर मार्ग गाड़ियां, रिक्शाओं की सुविधायें उपलब्ध हैं ।

औरंगाबाद से एलौरा 39 कि० मी०

„ „ जलगांव 161 कि० मी०

„ „ शिर्डी 154 कि० मी०

- ,, ,, से पूना 307 कि० मी०
 ,, ,, से पैठण 56 कि० मी०
 ,, ,, नासिक 229 कि० मी०
 ,, ,, नान्देड 307 कि० मी०
 ,, ,, विजापुर 440 कि० मी०
 ,, ,, बम्बई (पूना होकर) 438 कि० मी०
 ,, ,, बम्बई नासिक रोड होकर 412 कि० मी०
 ,, ,, अहमदनगर—112 कि० मी०

टैक्सीज—

औरंगाबाद से अजन्ता तथा एलोरा जाने के लिए टैक्सियाँ मीटर पर चलती हैं। सभी टैक्सियों के मीटर हैं और मीटर का चार्ज पहले एक किलोमीटर के लिए एक रुपया 50 पैसे 1.50। उसके बाद हर किलो मीटर के लिए 20 नये पैसे चार्ज लिया जाता है। हर 5 मिनट रुकने के लिए विलम्ब शुल्क 10 पैसे देने पड़ते हैं। टैक्सी सवारियों को औरंगाबाद के 32 कि० मी० परिसर (क्षेत्र) में आने जाने का परवाना है। टैक्सी का उपयोग एलोरा तक कर सकते हैं।

बस के लिए प्रासांगिक करार—

डिपो मैनेजर महाराष्ट्र स्टेट ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन औरंगाबाद तथा जलगाँव को अर्जी करने पर यात्रियों का अलग स्वतंत्र प्रबन्ध किया जाता है। शैक्षणिक सहूलत वालों के लिए खास सहूलत दी जाती है।

2. इन्डिया टूरिस्ट डेवलपमेंट कारपोरेशन आफिस से भी टैक्सी तथा बस (सम्पर्क साधने पर) मिल सकती हैं।

3. आराम गाड़ी और सहूल गाड़ी :—

औरंगाबाद से अजन्ता और एलोरा को ये गाड़ियाँ जाकर वापिस आती हैं। इनमें सरकार की ओर से मार्ग दर्शक रहते हैं। इसलिए यह प्रवास बहुत ही लाभदायी सिद्ध हुआ है। इसमें यात्रियों से दो रुपये गाइड चार्ज लिया जाता है।

4. एस० टी० डिपार्टमेंट की गाड़ियाँ :—

	समय	किराया रु० पैसे
1. औरंगाबाद से अजन्ता	सवेरे 7 बजे	36.50
2. औरंगाबाद से एलोरा	,, 7-30 बजे	16.00

(आर्डनरी गाड़ी)

3. औरंगाबाद से एलोरा

,, 9-30 बजे , 24.00

(आराम गाड़ी)

एस० टी० डिपार्टमेंट बस चार्ज ऑर्डनरी

औरंगाबाद से दौलताबाद

1.50 रु०

,, से एलोरा

3.00 रु०

,, से अजन्ता केवल्स

13.50 रु०

जलगांव से अजन्ता

6.50 रु०

5. महाराष्ट्र टूरिजम की गाड़ियाँ :—

1. औरंगाबाद से एलोरा (लक्झरी)

9 बजे

35.00

2. औरंगाबाद से अजन्ता (लक्झरी)

8 बजे

50.00

6. इण्डियन टूरिजम की गाड़ियाँ :—

1. औरंगाबाद से एलोरा (लक्झरी)

9 बजे

35.00

2. औरंगाबाद से अजन्ता (लक्झरी)

8 बजे

45.00

मार्ग दर्शक (गाईड्स) :—

व्यवस्थापित भारत सरकार टुरिस्ट ऑफिस में निश्चित शुल्क भरने पर दौलताबाद एलोरा और अजन्ता के लिए सरकारी अथवा निजी अधिकृत मार्ग दर्शक मिलते हैं।

यात्रियों की संख्या	प्रथम वर्ग गाईड	द्वितीय वर्ग गाईड
1 से 4 तक	18.00 रुपये	18.00 रुपये
5 से 15 तक	22.00 रुपये	12.00 रुपये
16 से 40 तक	25.00 रुपये	15.00 रुपये

इसके अलावा एलोरा, अजन्ता और दौलताबाद इन स्थानों पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ओर से प्रमाणित मार्ग दर्शक उपस्थित रहते हैं। इच्छानुसार मार्ग दर्शक मिलेंगे।

ठहरने के लिए निवास स्थान

नाम	स्थान	फोन नम्बर
रामा इण्टरनेशनल होटल	चिकलठाणा	845
अजन्ता अम्बा सिडर होटल	चिकलठाणा	8367
औरंगाबाद होटल, कोर्ट के सामने	औरंगाबाद (आई०टी०डी०सी०)	
पिदण्हल होटल, स्टेशन रोड	"	47020
नंदनवन होटल, पदमपुरा कार्नर	"	3315
नीलम होटल भड़कल दरवाजा	"	4561
होटल नटराज	"	4260
अशोका होटल-पैठणगेट के पास	"	3529
मेघदूत होटल, पैठणगेट के पास	"	3349
पंजाब नेशनल होटल, पान दरीवा	"	
एम्पायर होटल सिटी चौक	"	4649
कठियावाड़ होटल	"	
न्यू पंजाब लाजिंग एण्ड बोर्डिंग	"	5597
टूरिस्ट होम, रेलवे स्टेशन (उडुपी होटल)	"	4212
मेवाड़ लाजिंग एण्ड बोर्डिंग	शहागंज	
गीतांजलि गेस्ट हाऊस	हेडपोस्ट आफिस के पीछे	4674
मंजीत टूरिस्ट लॉज	रेलवे स्टेशन	3285
कामाक्षी लाजिंग बोर्डिंग	चाँक	
होटल ओबराय	उत्तमानपुरा	3841
श्री दि० जैन चन्द्रसागर धर्मशाला	शहागंज बस स्टैण्ड के पास	3674
समर्थभक्त धर्मशाला	रेलवे स्टेशन के पास	
बाला जी धर्मशाला	शहागंज	
अग्रसेन भवन (मंगल कार्यालय)	पानदरीवा	
हालिडे कैम्प एम० टी० डी० सी०	रेलवे स्टेशन	



अन्य निवास स्थान

1. गव्हर्नमेण्ट हालिडे कैम्प रेलवे स्टेशन के पास

जाँइण्ट डायरेक्टर आफ टूरिज्म महाराष्ट्र सरकार
9 फोर शोअर रोड, मुम्बई-1

2. सुभेदारी गेस्ट हाऊस औरंगाबाद

कार्याकारी अभियंता
(बी० एण्ड सी०) पी० डब्लू० डी० पदमपुरा
औरंगाबाद

3. ट्रैवलर्स बंगला (डांग बंगला)
रेलवे रोड, औरंगाबाद

म्युनिसिपल इन्जिनियर औरंगाबाद

4. फर्दापुर गेस्ट हाऊस, अजन्ता गुफा से
5 कि० मी० दूरी पर है

कार्यकारी अभियंता पी० डब्लू० डी०
पदमपुरा, औरंगाबाद।

5. फारेस्ट रेस्ट हाऊस, फर्दापुर

डिविजनल फारेस्ट आफिसर उस्मान-
पुरा, औरंगाबाद।

6. हालिडे कैम्प, फर्दापुर

जाँइण्ट डायरेक्टर ऑफ टूरिज्म
महाराष्ट्र सरकार आफ फारेस्ट रोड,
मुम्बई नं० 1

एलोरा गुफा के पास के निवास स्थान

7. लोकल फंड ट्रैवलर्स बंगला

एफसीक्यूटिव आफिसर, जिला परि-
षद, औरंगाबाद।

8. गेस्ट हाऊस खुदाबाद, एलोरा गुफा से
3 कि० मी० दूरी पर है।

कार्यकारी अभियंता पी० डब्लू० डी०
पदमपुरा, औरंगाबाद।

9. होटल कैलाश प्राईवेट लि० एलोरा
गुफा क्र० 16 से 10 कदम की दूरी
पर है।

मैनेजर, होटल कैलाश प्राईवेट लि०
एलोरा।

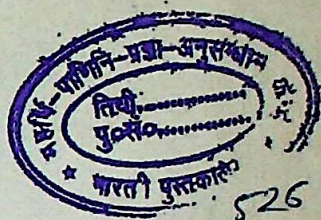
नोट :— जंगह खाली हो जाने पर स्थानिय अधिकारी। दिन के लिए दे
सकते हैं।

बैंक

1. स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद, शहागंज छावनी, रेलवे स्टेशन
2. केनरा बैंक, शहागंज
3. आन्ध्रा बैंक, शहागंज
4. महाराष्ट्रा बैंक, शहागंज, मिल कानेर, क्रांति चौक
5. विजया बैंक, सराफा रोड
6. इण्डियन आवरसीज बैंक, चौराहा
7. इण्डियन बैंक, सराफा रोड
8. बॉम्बे मर्केंटाइल बैंक, चौक
9. सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, गुलमण्डी, मोढ़ा, क्रांति चौक
10. बड़ोदा बैंक, पेठन गेट
11. पिपल्स को-आपरेटिव बैंक, पेठनगेट
12. यूनाईटेड वेस्टर्न बैंक, औरंगपुरा
13. यूनियन बैंक, कासारी बाजार
14. पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक, नूतन कालोनी
15. यूनाईटेड कमर्शियल बैंक, सराफा रोड
16. स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, क्रांति चौक
17. बैंक ऑफ इण्डिया, क्रांति चौक
18. यूनाईटेड बैंक, उस्मानपुरा
19. सिंडीकेट बैंक, स्टेशन रोड
20. पंजाब नेशनल बैंक, शहागंज
21. इलाहाबाद बैंक, खड़केश्वर
22. सरस्वत बैंक, खड़केश्वर
23. औरंगाबाद डिस्ट्रीक्ट को० बैंक, अदालत रोड, शहागंज, मसेड़ा
24. देना बैंक, जूना बाजार, क्रांति चौक
25. दि न्यू बैंक ऑफ इण्डिया, अदालत रोड

सिनेमा घर :—

1. मोहन टाकिज, सराफा रोड
2. स्टेट टाकिज, शहागंज
3. रीगल टाकिज, कासारी बाजार
4. गुलजार टाकिज—केलीबाजार
5. राक्सी टाकिज—पैठनगेट
6. सद्दिया
7. अप्सरा—खडकेद्वर
8. अम्बा "
9. अंजलि "
10. संगीता "



सराफा औरंगाबाद में :—

एक मात्र प्राप्ति स्थान

हमारे यहां अजन्ता एलोरा की सभी भाषाओं में मार्ग दर्शक एवं विविध प्रकार के रंगीन फोटो सेट, स्लाइड्स और हर तरह के खिलोने, प्रजेन्टेशन, आर्टीकल्स, ग्लास्बीड की मालाएँ उचित दाम पर थोक एवं फुटकर मिलती हैं।

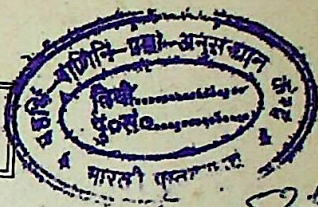
मै० अजन्ता एम्पोरियम सराफा औरंगाबाद

मैसर्स अचल कुमार नेमीनाथ साहूजी जैन

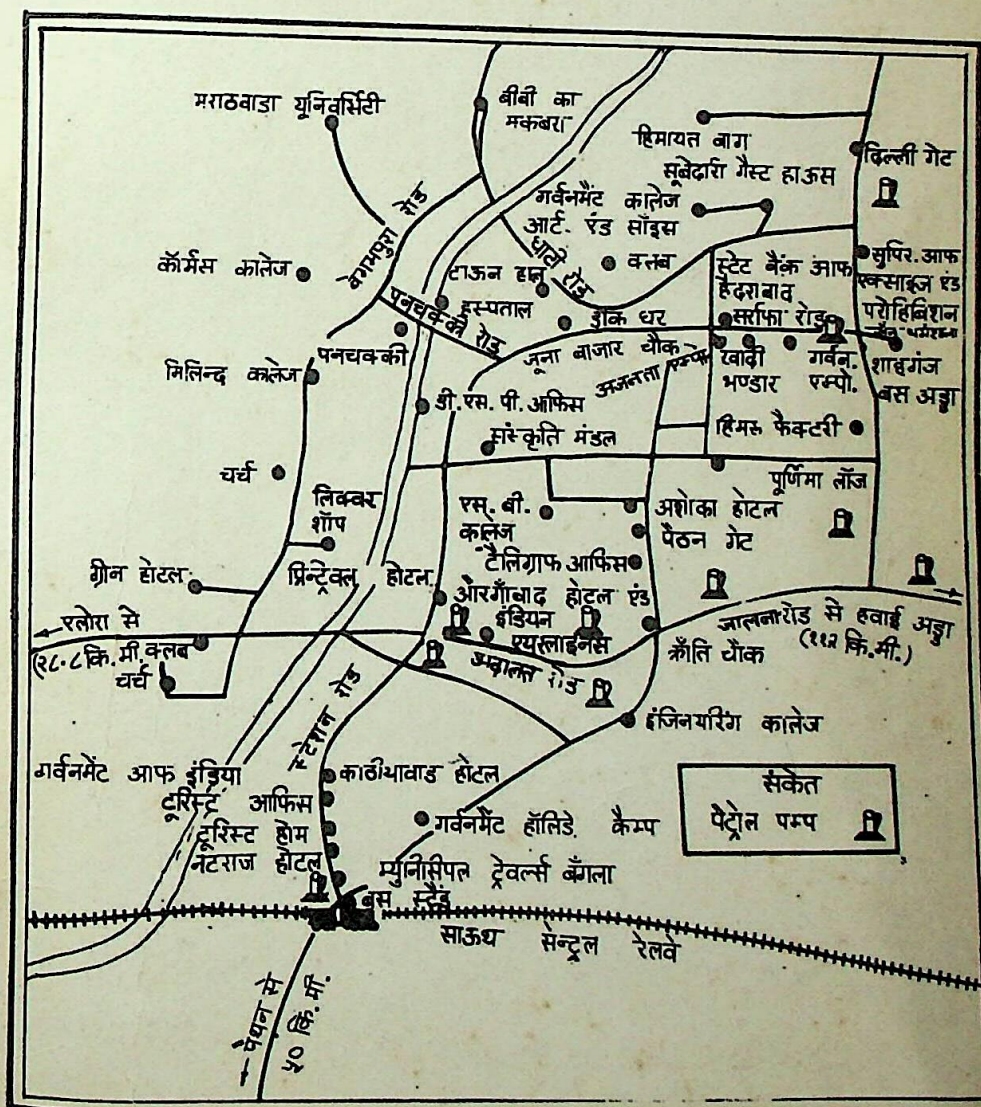
३-५-१६ सराफा रोड
जैन मन्दिर के सामने
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

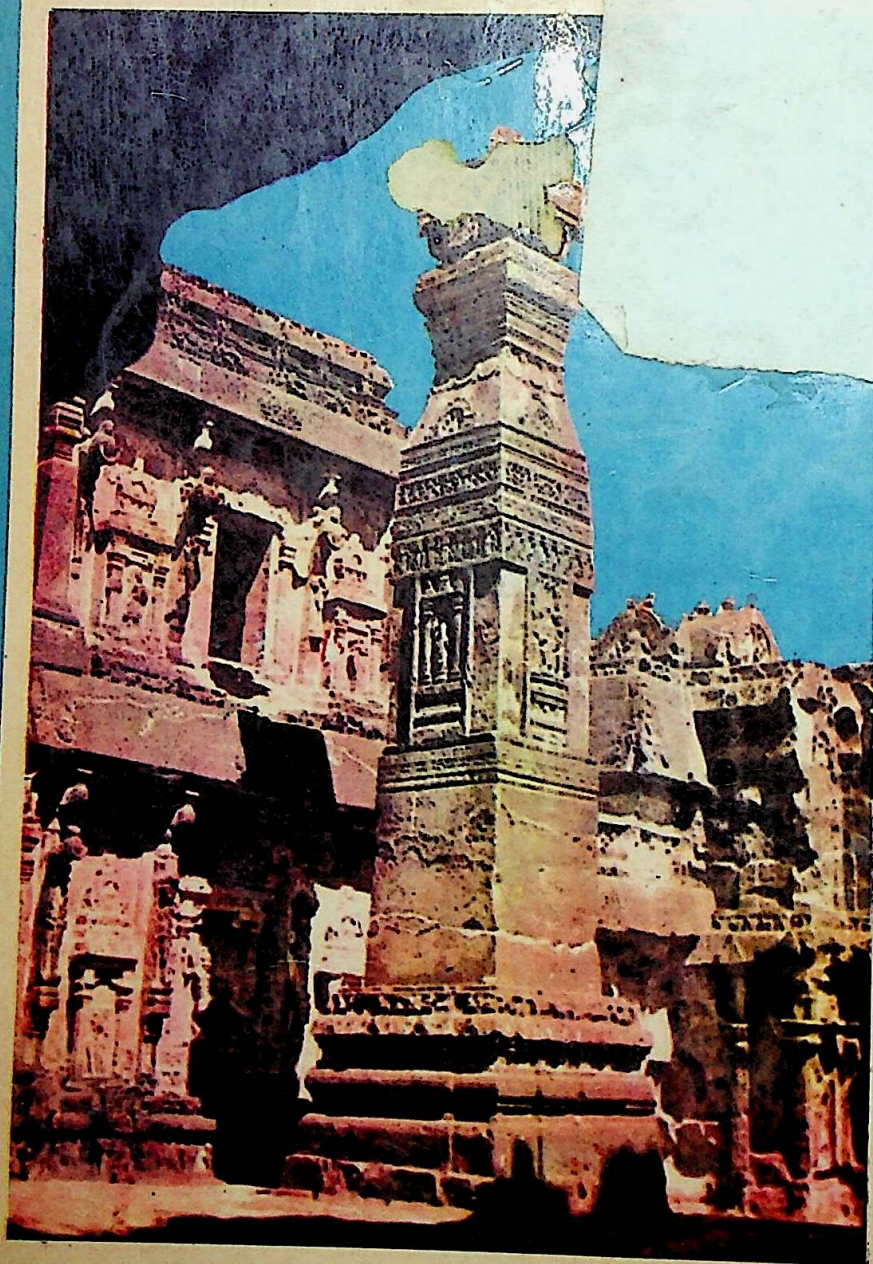


औरंगाबाद



526





औरंगाबाद, दौलताबाद,
एलोरा, अजंता